

हरिभूमि सिरसा-फतेहाबाद भूमि

रोहतक, रविवार 20 सितंबर 2026

खबर संक्षेप

26.50 लाख की ठगी के मामले में आरोपी काबू फतेहाबाद। ऑस्ट्रेलिया भेजने के नाम पर लाखों रुपये की ठगी करने वाले गिरोह पर शिकंजा कसते हुए थाना शहर रतिया पुलिस ने तीसरे आरोपी पंकज छावड़ा को गिरफ्तार किया है। पंकज पंजाब के फिरोजपुर जिले के मखु का रहने वाला है। पुलिस ने आरोपी को अदालत में पेश कर पृष्ठताछ व ठगी की राशि बरामद करने के उद्देश्य से 4 दिन के पुलिस रिमांड पर लिया है। इस मामले में पुलिस अब तक तीन आरोपियों को दबोच चुकी है।

हेरोइन बरामदगी मामले में मुख्य आरोपी पकड़ा फतेहाबाद। थाना सदर रतिया के अंतर्गत पुलिस चौकी महमड़ा की टीम ने हेरोइन बरामदगी मामले में मुख्य कड़ी को जोड़ते हुए मुख्य आरोपी बलजीत सिंह उर्फ कोडा पुत्र रमेश सिंह निवासी घनोट बस्ती, बादलगढ़ को गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस चौकी महमड़ा प्रभारी एसएसआई ज्योति प्रसाद ने बताया कि गत 22 अगस्त 2026 को पुलिस टीम महमड़ा क्षेत्र में गश्त और नशीले पदार्थों की रोकथाम के संबंध में मौजूद थी। उसी दौरान मिली गुप्त सूचना के आधार पर पुलिस ने महमड़ा से बीरेलाना रोड स्थित भाखड़ा चौराहा के पास नाकाबंदी की थी। नाकाबंदी के दौरान पुलिस ने आरोपी गुप्तीत सिंह उर्फ गोपी निवासी घनोट बस्ती, बादलगढ़ को 11.68 ग्राम हेरोइन के साथ रंगे हाथों काबू किया था।

अवैध शराब सहित आरोपी दबोचा

चोपटा। पुलिस ने चोपटा क्षेत्र से 93 बोतल अवैध देसी शराब बरामद कर एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। नाथूसरी चोपटा थाना प्रभारी ने बताया कि जमाल पुलिस चौकी की एक टीम गांव ढूंकड़ा क्षेत्र में मौजूद थी। उसी दौरान सामने से एक युवक प्लास्टिक का कड़ा लेकर आता हुआ दिखाई दिया। उक्त युवक ने पुलिस की गाड़ी को देखकर अचानक वापस मुड़कर वहां से फरार होने का प्रयास किया तो पुलिस घाटी ने शक के आधार पर उक्त युवक को काबू कर उसकी तलाशी ली तो उक्त युवक से 93 बोतल अवैध देसी शराब बरामद हुई।

पशुओं के स्वास्थ्य के लिए टीकाकरण जरूरी: संदीप

सिरसा। जिले के गांव लक्कड़ावाली के राजकीय पशु चिकित्सालय में पशु स्वास्थ्य एवं किसान जागरूकता शिविर आयोजित किया गया। शिविर में राजकीय पशु चिकित्सालय लक्कड़ावाली के पशु चिकित्सक डॉ. संदीप कंबोज ने उपस्थित पशुपालकों एवं किसानों को पशु स्वास्थ्य, नियमित टीकाकरण, पशुओं के रखरखाव तथा संक्रामक बीमारियों से बचाव के संबंध में विस्तार से जानकारी दी। डॉ. संदीप कंबोज ने बताया कि पशुओं को स्वस्थ रखने और संक्रामक बीमारियों से बचाने के लिए समय पर टीकाकरण करवाना अत्यंत आवश्यक है।

25 सितंबर तक मौसम रहेगा खुशक

■ राजस्थान में एंटीसाइक्लोन बनने से बदली हवाओं की दिशा, हरियाणा में मानसूनी गतिविधियां घटने के आसार

सुरेद्र असीजा ►फतेहाबाद

हरियाणा में अब मानसून की विदाई का दौर शुरू हो गया है। राजस्थान से मानसून की वापसी के साथ ही हवाओं की दिशा पुरवाई से पश्चिमी होने लगी है। चौधरी चरणसिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार के कृषि मौसम विज्ञान विभाग के अनुसार 25 सितंबर तक प्रदेश में मौसम परिवर्तनशील लेकिन मुख्यतः खुशक रहने की संभावना है। इस दौरान बारिश की

स्वास्थ्य विभाग की कार्रवाई: जिलेभर में 1.67 लाख से अधिक घरों का सर्वे फतेहाबाद में डेंगू की दस्तक: सात मरीज आए सामने, 780 स्थानों पर मिला लारवा

डेंगू की जांच के लिए 525 सैंपल लिए जा चुके

हरिभूमि न्यूज ►फतेहाबाद

स्वाइन फ्लू के मामले बढ़ने के बाद अब डेंगू ने भी फतेहाबाद में पैर पसारने शुरू कर दिए हैं। इस सीजन में जिले में अबतक डेंगू पॉजिटिव मरीजों की संख्या 7 हो गई है। स्वास्थ्य विभाग अब तक डेंगू की जांच के लिए 525 सैंपल ले चुका है। इनमें से सामने आए संक्रमित मरीजों में एक का उपचार सरकारी अस्पताल और छह का निजी अस्पतालों में हुआ। राहत की बात यह है कि सभी सात मरीज अब अस्पतालों से डिस्चार्ज हो चुके हैं। नया मरीज निजी अस्पताल में उपचाराधीन है और उसकी हालत स्थिर बताई गई है।

लारवा मिलने वाले सभी स्थानों पर नोटिस जारी

डेंगू की रोकथाम के लिए स्वास्थ्य विभाग की ओर से घर-घर सर्वे अभियान चलाया जा रहा है। अब



फतेहाबाद। नागरिक अस्पताल।

फोटो: हरिभूमि

►► 15 दिन का अभियान, हर घर की जांच पर जोर

स्वास्थ्य विभाग की ओर से प्रत्येक माह 1 से 15 तारीख तक विशेष अभियान चलाया जाता है। अभियान में स्वास्थ्य कर्मचारी घरों में जाकर पानी जमा होने वाले स्थानों की जांच करते हैं। विभाग ने लोगों से घरों और आसपास पानी जमा नहीं होने देने तथा कूलर, टंकियों और गमलों की नियमित सफाई करने की अपील की है। बढ़ते मामलों को देखते हुए सरकारी अस्पतालों में डेंगू मरीजों के उपचार के लिए 5 वार्ड और 10 बेड आरक्षित किए गए हैं। स्वास्थ्य विभाग का कहना है कि स्थिति पर लगातार नजर रखी जा रही है और संदिग्ध मरीजों की जांच कराई जा रही है।

घरों व आसपास पानी इकट्ठा न होने दें

डेंगू को लेकर स्वास्थ्य विभाग पूरी तरह से गंभीर है। ड्रेज ड्र डोर सर्वे करवाया जा रहा है और जहां भी लारवा मिल रहा है उसे नष्ट किया जा रहा है। लोगों से भी अपील है कि घरों व आसपास पानी इकट्ठा न होने दें। जिन स्थानों पर लारवा मिल रहे हैं, उन लोगों को नोटिस भी जारी किए जा रहे हैं।

-डॉ. विष्णु मिश्र, जिला महामारी रोकथाम विशेषज्ञ

तक जिले में 1 लाख 67 हजार 663 घरों की जांच की जा चुकी है। इस दौरान 780 घरों में मच्छरों का

लारवा मिला।

विभाग ने लारवा मिलने वाले सभी 780 स्थानों पर नोटिस जारी

जांच बैठते ही रातों रात डाली टाइलें शिकायत पर डीसी ने बैठाई जांच

■ कल टीम करेगी निरीक्षण, बिना बनाए ही हो गई गली की पैमेंट

हरिभूमि न्यूज ►सिरसा

नगर परिषद सिरसा में धांधलियों का मामला रूकने का नाम नहीं ले रहा है। आरोप है कि अधिकारियों और ठेकेदारों की मिलीभगत से करोड़ों रुपये खर्च कर कागजों में गली निर्माण कर दिया गया। ताजा मामला हाल ही में नगर परिषद में शामिल हुए शहर के कुछ एरिया में गली निर्माण कर दिया गया, लेकिन जांच के बाद मामला उठा तो ठेकेदार ने पर्दा डालने के लिए रातों-रात गली में इंटरलॉक टाइलें बिछाने के लिए डाल दी। भाजपा जिलाध्यक्ष यतिंद्र सिंह ने नगर परिषद में हाल ही में शामिल हुए एरिया में विकास कार्यों में धांधली के आरोप लगाते हुए सीएम से आग्रह किया था। मामले में उपायुक्त शांतनु शर्मा ने पीडब्ल्यूडी विभाग तथा मार्केटिंग बोर्ड सिरसा के कार्यकारी अभियंताओं की जांच टीम गठित कर जांच के निर्देश दिए। जांच टीम द्वारा मामले की भौतिक जांच करने के लिए 21 सितंबर का दिन तय किया गया। जिस पर ठेकेदार द्वारा शनिवार तड़के



सिरसा। कागजों में बनी गली में डाली गई टाइलें।

फोटो: हरिभूमि

►► अधिकारियों पर पैसे हड़पने का आरोप

भाजपा जिलाध्यक्ष सहित अन्य ने सीएम को लिखे पत्र में बताया कि नगर परिषद में शामिल किए गए नए क्षेत्र में गलियों के निर्माण के लिए सरकारी खजाने से करोड़ों रुपये की राशि जारी की गई।

लेकिन ठेकेदारों ने अधिकारियों के साथ मिलकर कागजों में गली का निर्माण कर डाला और पैसे हड़प गए। बताया गया कि वर्ष 2024 में 26 स्वीकृत कालोनियों में विकास कार्य के लिए पैसा जारी किया गया था।

दर्जनभर गलियों के निर्माण के लिए इंटरलॉक टाइलें पहुंचाई गई है ताकि रातों रात गलियों का निर्माण किया जा सके।

बताया जाता है कि जिन गलियों को बनाने के लिए इंटरलॉक टाइलें भेजी गई है, उन्हें चेहरों में बनाया जा चुका है और उनका भुगतान भी हो चुका है। ऐसे में न केवल ठेकेदार बल्कि नगर परिषद के जेई, एमई, ईओ व अन्य के चेहरों से नकाब उतरना तय है? शिकायत में बताया कि यूसी-एस30 में टेंडर एक करोड़ 31 लाख का है, जिसमें 112000 वर्ग फीट में कार्य किया जाना था लेकिन

महज 15 हजार वर्ग फीट ही कार्य किया गया। इसी प्रकार यूसी-एस55ए में 66 हजार वर्ग फीट के लिए 77 लाख का टेंडर हुआ था। इसमें भी महज 15 हजार वर्ग फीट काम किया गया। यूसी-55 में 67500 वर्ग फीट काम होना था लेकिन मौके पर 34 हजार वर्ग फीट ही कार्य हुआ। शिकायत में बताया कि यूसी-एस30 रंगड़ी रोड का निर्माण होने से पहले ही नगर परिषद के अधिकारियों ने इसकी पैमेंट कर दी। मामले की जांच में गोलमाल सिद्ध हुआ लेकिन आजतक किसी के खिलाफ कोई एक्शन नहीं हुआ।

डेंगू से बचाव के लिए ये करें

- सप्ताह में एक बार कूलर, फूलदान, पशु और पक्षियों के पानी के बर्तन एक बार अवश्य खाली करें।
- कूलर उपयोग में न आए तो रगड़ कर सुखा कर रख दें।
- छतों पर रखी पानी की टंकियों ढक्कन लगाकर बंद कर दें।
- शरीर को ढककर रखें और मच्छर रोधी दवा या क्रीम का उपयोग करें।
- सोते समय मच्छरदानी का प्रयोग करें।
- बुखार होने पर डॉक्टर की सलाह से उपचार लें।

यह सावधानियां बरतें

- अपने घर व कार्यालय के आसपास पानी जमा न होने दें। पानी से भरे गड्ढों में मिट्टी भर दें।
- घर की छत पर व आसपास टायर, ट्यूब, खाली डिब्बे, पॉलीथिन के लिफाफे खुले में न फेंकें।
- हैंड पंप व नल के आसपास पानी जमा न होने दें।
- यदि कूलर उपयोग में नहीं आ रहा है तो उसमें पानी इकट्ठा होने दें।
- खुद दवा न खाएं। एसपीन, बूटीन दवाइयों का सेवन न करें।

मरीज 7, सैंपल 525, फिर भी फॉगिंग का सवाल

स्वास्थ्य विभाग एक तरफ डेंगू की रोकथाम के लिए लगातार सर्वे और सैंपलिंग कर रहा है तथा लारवा मिलने पर नोटिस जारी कर रहा है, लेकिन शहर में फॉगिंग की रफ्तार खाली के घेरे में है। स्वास्थ्य विभाग के अनुसार शहर में फॉगिंग की जिम्मेदारी नगर परिषद की है, लेकिन अभी तक नियमित फॉगिंग शुरू नहीं हुई है। पिछले दिनों नगर परिषद के सफाई कर्मचारियों की 35 दिन से अधिक घली हड़ताल के कारण शहर में जगह-जगह कचरा जमा रहा। कर्मचारी अब सफाई व्यवस्था सुधारने में जुटे हैं। ऐसे में डेंगू के बढ़ते मामलों के बीच जमा कचरा और मच्छरों की संभावित बढ़ोतरी चिंता बढ़ा रही है।

किए हैं। स्वास्थ्य विभाग की टीमों कूलर, पानी की टंकियों, गमलों और अन्य ऐसे स्थानों की जांच कर

रही हैं, जहां पानी जमा होने से मच्छरों के प्रजनन की संभावना रहती है।

5 युवकों पर डंडों से हमला, एक की टांग तोड़ी

■ पैसों के लेन-देन को विवाद, 4 युवक जान बचाकर भागे

हरिभूमि न्यूज. फतेहाबाद।

शहर के भूना मोड़ के पास रात पैसों के लेन-देन के विवाद को लेकर 20-25 युवकों द्वारा 5 युवकों पर लाठी-डंडों और राइ से जानलेवा हमला करने का मामला सामने आया है। हमले में 4 युवक जैसे-तेैसे जान बचाकर भागने में सफल रहे, जबकि हैप्पी नामक युवक पर हमलावरों ने ताबड़तोड़ वार कर उसकी टांग तोड़ दी। बीच बचाव और भागने के दौरान हमलावरों ने पीड़ितों की दोनों बाइकों को भी बुरी



फतेहाबाद। अस्पताल में उपचाराधीन युवक।

तरह क्षतिग्रस्त कर दिया। गंभीर रूप से घायल हैप्पी को पहले निजी अस्पताल ले जाया गया, जहां प्राथमिक कंवरपाल ने बताया कि गंभीर हालत को देखते हुए अन्य अस्पताल के लिए रेफर कर दिया

नशा बेचते हुए रंगे हाथों पकड़ा युवक, हेरोइन जब्त

हरिभूमि न्यूज ►फतेहाबाद

नशा तस्करी और नशीले पदार्थों के सेवन के खिलाफ चलाए जा रहे विशेष अभियान के तहत भूना पुलिस ने एक युवक को 6.19 ग्राम हेरोइन सहित काबू किया है। पकड़ा गया मुख्य आरोपी राहुल उर्फ धोला भूना के वार्ड नं. 8 का रहने वाला है। इसके अलावा पुलिस ने मौके से नशा कर रहे दो अन्य युवकों दीपक उर्फ दीपू पुत्र रामनिवास और संदीप उर्फ काला निवासी वार्ड नंबर 8, भूना को भी

9 खेलों से अनुशासन, और नेतृत्व की भावना होती विकसित : बराला



10 50 दिन बाद कब्जा हटाने नहीं मात्र डराने के लिए चला अभियान



सिरसा। गुरद्वारा चिल्ला साहिब में बैठक करते किसान व पशुपालक।

हरियाणा में नकली दूध के खिलाफ जंग शुरू

1-3 अक्टूबर तक दूध बेचने पर लगेगा 51,000 जुर्माना

■ गुरद्वारा चिल्ला साहिब में जिला स्तरीय बैठक में लिया फैसला

हरिभूमि न्यूज ►सिरसा

नकली दूध, खोया, पनीर और अन्य मिलावटी दुग्ध उत्पादों के खिलाफ अभियान को लेकर शनिवार को गुरद्वारा चिल्ला साहिब, सिरसा में जिला स्तरीय बैठक आयोजित की गई। बैठक में किसानों, पशुपालकों, मजदूरों, दूधियों और अन्य लोगों ने भाग लिया। बैठक में निर्णय लिया गया कि 1 अक्टूबर से 3 अक्टूबर तक पूरे हरियाणा में दूध की सप्लाई बंद रखने का आह्वान किया जाएगा। इस दौरान वीटा, वेरका, सरस और अमूल सहित अन्य दूध कंपनियों से अपील की गई कि वे गांवों और शहरों में दूध की गाड़ियां न भेजें। बैठक में कहा गया कि यदि इस अवधि में कंपनियां दूध की सप्लाई के लिए वाहन भेजती हैं तो उससे होने वाले नुकसान की जिम्मेदारी संबंधित कंपनी की होगी। सभी किसान, मजदूर और दूधियों से भी अपील की गई कि 1 से 3 अक्टूबर तक न तो दूध लेने जाएं और न ही दूध बेचें। बैठक में लिए गए निर्णय के अनुसार, यदि कोई व्यक्ति

कमेटी का गठन

बैठक में आंदोलन को आगे बढ़ाने के लिए जिला कमेटी का गठन भी किया गया। कमेटी में जसबीर सिंह भाटी, मैक्स साहुवाल, भूपिंदर सिंह नंबरदार, उदय प्रताप सिंह गिल, गुरी सेखी, सोम चंद सरपंच, आकाश कंबोज, अर्जुन कंबोज, गोरा बराड़, रोशन लाल, खुशदीप सिंह, बलजिंदर सूच और कुलविंदर सिंह को शामिल किया गया। बैठक में वक्ताओं ने कहा कि अभियान का उद्देश्य पशुपालकों को दूध का उचित दाम दिलाने के साथ-साथ नकली और मिलावटी दूध उत्पादों के खिलाफ जनजागरूकता पैदा करना तथा नकली के खिलाफ जंग, असली को प्रमोट अभियान को पूरे हरियाणा में आगे बढ़ाना है।

आंदोलन के दौरान दूध बेचता हुआ पाया जाता है तो उस पर 51,000 का सामुदायिक जुमाना लगाने का निर्णय लिया गया। यह राशि संबंधित गांव/क्षेत्र के धार्मिक स्थल— गुरद्वारा, मंदिर, मजार या डेरे में बांटने की बात कही गई। साथ ही, बैठक में यह निर्णय भी लिया गया कि दूध देने के इस्तेमाल किए जा रहे साधन को जब्त किया जाएगा तथा पकड़े गए दूध को गरीब बस्तियों में वितरित किया जाएगा।

ये है मामला

आरके कालोनी निवासी रिपन मेहता ने बताया कि वह अपने साथी हैप्पी और 3 अन्य दोस्तों के साथ दो मोटरसाइकिलों पर सवार होकर हिसार रोड की तरफ से आ रहा था। जैसे ही वे भूना मोड़ के सामने पहुंचे, सतीश नामक व्यक्ति अपने 20-25 अन्य साथियों के साथ हाथ में लाठी, डंडे और राइ लेकर आया और आते ही उन पर हमला बोल दिया। रिपन के अनुसार, हमलावरों ने उसके साथ हाथपाई की, जिसमें उसका आईफोन टूट गया और उसके साथी हैप्पी को बेरहमी से पीटकर उसकी टांग तोड़ दी। आरोप है कि इसके बाद हमलावर रिपन का पीछा करते हुए सुंदर नगर स्थित उसके ससुराल की घर तक जा पहुंचे और वहां जमकर हंगामा करते हुए हल्का पथराव भी किया।

बिजली कर्मचारियों ने मांगें नहीं मानने पर जताया रोष

हरिभूमि न्यूज ►सिरसा

लंबित मांगों एवं कार्यालयीन कार्यों को लेकर बिजली कर्मचारियों ने शनिवार को बैठक कर रोष जाहिर किया। यूनियन पदाधिकारी शिशपाल नेहरा ने बताया कि कर्मचारियों की मांगों को लेकर कार्यकारी अभियंता को लिखित एजेंडा पहले ही कई बार दिया जा चुका है, लेकिन न तो मिलने के लिए समय दिया जा रहा है और न ही लंबित मांगों का समाधान हुआ। यूनियन के अनुसार, कर्मचारियों

अथवा यूनित पदाधिकारियों द्वारा कर्मचारियों के कार्यों की फाइलें लेकर जाने पर कई बार हस्ताक्षर करने से मना किया जाता है तथा कथित रूप से दुर्व्यवहार किया जाता है। यूनियन ने मांग की है कि लंबित मांगों का समाधान, लंबित फाइलों पर नियमानुसार कार्रवाई, एजेंडे के मिनट्स ऑफ मीटिंग जारी करने तथा कथित दुर्व्यवहार की निष्पक्ष जांच करावाई जाए। यूनियन ने स्पष्ट किया कि कर्मचारियों के स मान एवं जायज कार्यों से समझौता नहीं किया जाएगा।

शराब पीकर वाहन चलाते वाले (ड्रिंक एंड ड्राइव) : 5 चालान
बिना नंबर प्लेट दौड़ रहे वाहन : 34 चालान
हाई सिक्कोरिटी रजिस्ट्रेशन प्लेट न होने पर : 31 चालान
अन्य यातायात उल्लंघनों के तहत : 74 चालान

एसपी का सख्त संदेश

पुलिस अधीक्षक निकिता खट्टर ने स्पष्ट लहजे में अधिकारियों को निर्देश दिए हैं कि शराब पीकर गाड़ी चलाने, बिना नंबर प्लेट घूमने और गाड़ियों में अवैध मॉडिफिकेशन करने वालों पर पैनी नजर रखी जाए। सड़क सुरक्षा और शांति व्यवस्था से किसी भी कीमत पर समझौता नहीं किया जाएगा।

ने गंभीर लापरवाही बरतने पर बुलेट पटाखा व बिना नंबर प्लेट



फतेहाबाद। अभियान के दौरान वाहनों की जांच करते पुलिस कर्मचारी।

कसा। अभियान के दौरान मुस्तैद पुलिस कर्मियों ने 1066 वाहनों की

गहन जांच की और 144 चालान काटे गए। कार्रवाई के दौरान पुलिस

अभियान

सड़क दुर्घटनाओं पर लगाम लगाने के उद्देश्य से चलाया ‘सीलिंग प्लान-बी’

37 नाकों पर 1066 वाहनों की जांच, 144 चालान काटे बुलेट पटाखा व बिना नंबर प्लेट वाले 10 वाहन इंपाउंड

हरिभूमि न्यूज ►फतेहाबाद

जिले में कानून-व्यवस्था को पूरी तरह चुस्त-दुरुस्त रखने और सड़क दुर्घटनाओं पर लगाम लगाने के उद्देश्य से फतेहाबाद पुलिस ने सीलिंग प्लान-बी के तहत बड़े पैमाने पर विशेष नाकाबंदी अभियान चलाया। पुलिस अधीक्षक निकिता खट्टर के कड़े दिशा-निर्देशों में चलाए गए इस अभियान के तहत कुल 37 विशेष नाके लगाकर चालकों पर शिकंजा

आईएमडी के ताजा पूर्वानुमान में भी 19 सितंबर को आंशिक बादल और बारिश/गरज-चमक की संभावना बताई है, जबकि 20 सितंबर के बाद मौसम मुख्यतः आंशिक रूप से बादलयुक्त रहने का पूर्वानुमान है। किसानों के लिए संकेत: बारिश का दौर कमजोर होने के साथ खेतों में नमी तेजी से कम हो सकती है। ऐसे में कटाई, मंडीकरण और अन्य कृषि कार्य मौसम के पूर्वानुमान को ध्यान में रखकर करने की सलाह दी जा सकती है।

गतिविधियां कम होंगी और दिन के तापमान में धीरे-धीरे हल्की बढ़ोतरी हो सकती है। विभागाध्यक्ष डॉ. मदन खींचड़ के अनुसार 19 सितंबर से मानसून की वापसी की अक्षय रेखा राजस्थान के रामगढ़, मोहनगढ़, फल्गौदी और खाजूवाला तक पहुंच गई है। राजस्थान के ऊपर एंटीसाइक्लोन बनने से हवाओं के पुरवाई से पश्चिमी होने की संभावना है। इसके चलते मानसून टर्फ की उत्तरी सीमा दक्षिण की ओर मध्य भारत की तरफ खिसकने के आसार हैं। हिसार के लिए

बीच-बीच में हल्के बादल, बारिश के आसार कम

अगले पांच दिनों में मौसम पूरी तरह साफ रहने के बजाय परिवर्तनशील रह सकता है। बीच-बीच में हल्के बादल दिखाई दे सकते हैं, लेकिन व्यापक बारिश की संभावना नहीं है। वातावरण में नमी की मात्रा भी कम होगी। इसके चलते सुबह और शाम के समय हल्की ठंड का अहसास शुरू होने की संभावना है।

गतिविधियां कम होंगी और दिन के तापमान में धीरे-धीरे हल्की बढ़ोतरी हो सकती है। विभागाध्यक्ष डॉ. मदन खींचड़ के अनुसार 19 सितंबर से मानसून की वापसी की अक्षय रेखा राजस्थान के रामगढ़, मोहनगढ़, फल्गौदी और खाजूवाला तक पहुंच गई है। राजस्थान के ऊपर एंटीसाइक्लोन बनने से हवाओं के पुरवाई से पश्चिमी होने की संभावना है। इसके चलते मानसून टर्फ की उत्तरी सीमा दक्षिण की ओर मध्य भारत की तरफ खिसकने के आसार हैं। हिसार के लिए

तीन मिडकैप फंड ने किया बेंचमार्क से बेहतर प्रदर्शन

- » व्हाइटओक, एडेलवाइज़ और निप्पॉन इंडिया ने दिया खूब रिटर्न
- » निवेश से पहले जोखिम और लागत को समझना बेहद जरूरी
- » मिडकैप में ज्यादा रिटर्न की संभावना के साथ उतार-चढ़ाव भी अधिक
- » तीनों फंडों ने अलग-अलग अवधि में बेंचमार्क को पीछे छोड़ा
- » पिछले प्रदर्शन को भी भविष्य की गारंटी का मानें

बिजनेस डेस्क

मिडकैप न्यूउअल फंड उन कंपनियों में निवेश करते हैं जो बड़ी कंपनियों से छोटी, लेकिन स्मॉलकैप कंपनियों से अपेक्षाकृत बड़ी होती हैं। इनमें विकास की संभावनाएं मजबूत हो सकती हैं, लेकिन बाजार में गिरावट आने पर इनका उतार-चढ़ाव भी अधिक हो सकता है। हाल के आंकड़ों में मिडकैप सेगमेंट की रफ्तार कुछ धीमी हुई है। 10 सितंबर 2026 तक एक साल में निपटी मिडकैप 150 टीआरआई का रिटर्न 7.19% रहा, जबकि तीन साल में इसका सालाना औसत रिटर्न करीब 15% रहा। ऐसे माहौल में यह देखना महत्वपूर्ण हो जाता है कि कौन-से सक्रिय मिडकैप फंड अपने बेंचमार्क से आगे रहे हैं। इविवर्टीमास्टर की 30 से अधिक फंडों की स्क्रीनिंग में तीन योजनाएं सामने आईं व्हाइटओक कैपिटल मिड कैप फंड, एडेलवाइज़ मिड कैप फंड और निप्पॉन इंडिया ग्रोथ मिड कैप फंड। इस विश्लेषण में रिटर्न के साथ जोखिम-समायोजित प्रदर्शन को भी देखा गया। आंकड़े 10 सितंबर 2026 तक के हैं।

1. व्हाइटओक कैपिटल मिड कैप फंड

यह तीनों में अपेक्षाकृत नया फंड है। सितंबर 2022 में शुरू हुए इस फंड ने उपलब्ध अवधि में बेंचमार्क से काफी बेहतर प्रदर्शन किया है। एक साल में फंड का रिटर्न 14.92% रहा, जबकि निपटी मिडकैप 150 टीआरआई का रिटर्न 7.19% था। तीन साल में फंड ने 21.73% सालाना रिटर्न दिया, जबकि बेंचमार्क का रिटर्न 14.92% रहा। इस फंड की खासियत इसका अपेक्षाकृत विविध पोर्टफोलियो है। मैक्स फाइनेंशियल सर्विसेज, भारती हेक्साकॉम, फेडरल बैंक, लॉरेस लैब्स और कोफोर्ज इसकी प्रमुख हिस्सेदारी में शामिल हैं। शीर्ष होल्डिंग का वजन भी बहुत ज्यादा नहीं है। तीन साल की अवधि में इसकी अस्थिरता 15.86 रही। शार्प अनुपात 0.33 और सॉर्टिनो अनुपात 0.62 रहा। ये आंकड़े बताते हैं कि उपलब्ध तीन साल की अवधि में फंड ने जोखिम के मुकाबले अच्छा प्रदर्शन किया।

2. एडेलवाइज़ मिड कैप फंड

एडेलवाइज़ मिड कैप फंड का इतिहास बाकी दोनों की तुलना में लंबा है। यह फंड दिसंबर 2007 में शुरू हुआ था और इसके पास अलग-अलग बाजार परिस्थितियों का उपेक्षाकृत लंबा रिकॉर्ड है। पांच साल में इसने 18.89% और सात साल में 25.40% सालाना रिटर्न दिया। इसी अवधि में निपटी मिडकैप 150 टीआरआई का रिटर्न क्रमशः 16.52% और 22.68% रहा। तीन साल में फंड का रिटर्न 20.65% रहा, जबकि बेंचमार्क का रिटर्न 14.92% था। फंड का निवेश वित्तीय कंपनियों और बाजार से जुड़ी कुछ कंपनियों की ओर अपेक्षाकृत अधिक रहा है। इसके पोर्टफोलियो में एमसीएक्स, बीएसई, फेडरल बैंक और एयू स्मॉल फाइनेंस बैंक जैसी कंपनियां शामिल हैं। यही सेक्टर झुकाव इसके प्रदर्शन का एक महत्वपूर्ण पहलू है। तीन साल की अवधि में इसकी अस्थिरता 16.61 रही, जो इन तीनों में सबसे अधिक थी। शार्प अनुपात 0.30 और सॉर्टिनो अनुपात 0.56 रहा। इस फंड की एक महत्वपूर्ण बात इसका लंबा ट्रैक रिकॉर्ड है। हालांकि, निवेशकों को यह भी देखना चाहिए कि मौजूदा फंड मैनेजमेंट टीम के कार्यकाल और पूरे ऐतिहासिक प्रदर्शन में कितना अंतर है।

3. निप्पॉन इंडिया ग्रोथ मिड कैप फंड

निप्पॉन इंडिया ग्रोथ मिड कैप फंड तीनों में सबसे पुराना है। अक्टूबर 1995 में शुरू हुआ यह फंड कई बाजार चक्रों से गुजर चुका है। इसके लंबे इतिहास में डाट-कॉम संकट, 2008 की वैश्विक वित्तीय मंदी, टेपर वेट्टम, नोटबंदी, कोविड और मिडकैप में आई बड़ी गिरावट जैसे दौर शामिल हैं। एक साल में फंड ने 8.44% तीन साल में 17.73%, पांच साल में 18.31% और सात साल में 24.11% सालाना रिटर्न दिया। संबंधित अवधि में निपटी मिडकैप 150 टीआरआई का रिटर्न क्रमशः 7.19%, 14.92%, 16.52% और 22.68% रहा। इससे पता चलता है कि उपलब्ध सभी प्रमुख अवधियों में फंड का रिटर्न बेंचमार्क से ऊपर रहा। तीन साल की अवधि में इसकी अस्थिरता 16.07 रही। शार्प अनुपात 0.27 और सॉर्टिनो अनुपात 0.51 रहा। फंड का आकार करीब 39,100 करोड़ रुपये बताया गया है, जो इन तीनों में सबसे बड़ा है। बड़ा आकार एक तरफ मजबूत निवेशक को दशता है, लेकिन मिडकैप क्षेत्र में बहुत बड़े फंड के लिए छोटी कंपनियों में बड़ी हिस्सेदारी बनाना अपेक्षाकृत कठिन हो सकता है। इसका प्रत्यक्ष योगदान व्यय अनुपात करीब 0.81% है।

सिर्फ रिटर्न देखकर निवेश न करें

मिडकैप फंड में पिछले रिटर्न को देखकर निवेश करना जोखिमपूर्ण हो सकता है। इस श्रेणी में शेयरों की कीमतों में बड़े उतार-चढ़ाव की संभावना रहती है। इसलिए निवेशकों को कम से कम पांच बातों पर ध्यान देना चाहिए—फंड का निवेश उद्देश्य, पोर्टफोलियो की गुणवत्ता, फंड मैनेजर का रिकॉर्ड, खर्च और अपने पोर्टफोलियो में मिडकैप का उचित हिस्सा। इसके अलावा फंड के आकार को भी नजरअंदाज नहीं करना चाहिए। बहुत बड़े फंड के लिए छोटी और मझौली कंपनियों में पर्याप्त हिस्सेदारी बनाना मुश्किल हो सकता है, जबकि छोटे फंड में दूसरी तरह के जोखिम हो सकते हैं।

एसआईपी निवेशकों के लिए क्या समझना जरूरी

मिडकैप फंड को आम तौर पर लंबी अवधि के निवेश के नजरिए से देखना चाहिए। बाजार में गिरावट के दौरान एसआईपी जारी रखने के लिए निवेशक में पर्याप्त जोखिम क्षमता होनी चाहिए।

उदाहरण के लिए, किसी फंड में पिछले तीन या पांच वर्षों में बेंचमार्क को पीछे छोड़ा है, इसका अर्थ यह नहीं है कि अगले तीन या पांच वर्षों में भी ऐसा ही होगा। बाजार की परिस्थितियां, कंपनियों की कमाई, मूल्यांकन और फंड की निवेश रणनीति बदल सकती हैं। इसलिए निवेश का निर्णय केवल किसने सबसे ज्यादा रिटर्न दिया के आधार पर नहीं, बल्कि अपने वित्तीय लक्ष्य, निवेश अवधि, जोखिम क्षमता और पहले से मौजूद पोर्टफोलियो को ध्यान में रखकर करना चाहिए।

फंड चुनते समय रिटर्न संग जोखिम पर ध्यान दें

व्हाइटओक कैपिटल मिड कैप फंड के आंकड़े उपलब्ध छोटी अवधि में मजबूत रहे हैं, एडेलवाइज़ मिड कैप के पास लंबा और मजबूत प्रदर्शन रिकॉर्ड है, जबकि निप्पॉन इंडिया ग्रोथ मिड कैप का इतिहास तीनों में सबसे लंबा है। तीनों की निवेश शैली, पोर्टफोलियो संरचना, फंड का आकार और लागत अलग-अलग हैं। इसलिए इन आंकड़ों को निवेश की गारंटी या भविष्य के रिटर्न का संकेत नहीं माना जाना चाहिए। मिडकैप फंड चुनते समय रिटर्न के साथ जोखिम, खर्च, पोर्टफोलियो और निवेशकों की अपनी परिस्पति-वितरण रणनीति को भी समान महत्व देना जरूरी है।

स्मार्ट बीटा फंड : दिला सकता है बढ़िया मुनाफा, जोखिम भी ज्यादा नहीं

कम लागत में बेहतर रणनीति से करें निवेश

निवेश मंत्रा

बिजनेस डेस्क

न्यूउअल फंड में निवेश करने वाले लोगों के सामने अब केवल पारंपरिक इंडेक्स फंड और सक्रिय रूप से संचालित फंड ही विकल्प नहीं हैं। स्मार्ट बीटा फंड भी निवेश की एक ऐसी रणनीति है, जो पैसिव निवेश की नियम-आधारित प्रक्रिया को अलग-अलग फैक्टर के आधार पर शेयर चुनने की रणनीति से जोड़ती है। इनका उद्देश्य बाजार के पारंपरिक इंडेक्स से अलग तरीके से निवेश करना और जोखिम के मुकाबले बेहतर रिटर्न हासिल करने की कोशिश करना होता है। हालांकि, स्मार्ट बीटा का मतलब यह बिल्कुल नहीं है कि फंड हर समय बाजार या सामान्य इंडेक्स से बेहतर प्रदर्शन करेगा।

साधारण इंडेक्स फंड किसी तय इंडेक्स की संरचना को दोहराने की कोशिश करते हैं। उदाहरण के लिए, किसी इंडेक्स में जिस कंपनी का जितना वजन है, फंड भी लगभग उसी अनुपात में उसमें निवेश करता है। स्मार्ट बीटा फंड इससे अलग तरीके से काम करते हैं। इनमें शेयरों का चयन और उनका वजन पहले से तय नियमों के आधार पर किया जाता है। यानी फंड मैनेजर की व्यक्तिगत पसंद के बजाय किसी निर्धारित रणनीति या फैक्टर को प्राथमिकता दी जाती है। यही वजह है कि स्मार्ट बीटा को सक्रिय और निष्क्रिय निवेश के बीच की रणनीति के तौर पर देखा जाता है। इसमें सक्रिय फंड की तरह अलग-अलग विशेषताओं वाले शेयर चुने जाते हैं, लेकिन चयन प्रक्रिया नियम-आधारित होती है।

चार प्रमुख फैक्टर को समझें

- वैल्यू** : इस रणनीति में ऐसे शेयरों पर ध्यान दिया जाता है जिन्हें निर्धारित वित्तीय मानकों के आधार पर उनकी कीमत की तुलना में आकर्षक माना जाता है। इसका आधार मूल्यांकन से जुड़े आंकड़े हो सकते हैं।
- क्वालिटी** : इसमें मजबूत वित्तीय स्थिति वाली कंपनियों को प्राथमिकता देने की कोशिश होती है। लाभप्रदता, कर्ज, आय की स्थिरता और अन्य वित्तीय मानक इसके आधार हो सकते हैं।
- मोमेंटम** : इसमें हाल के समय में बेहतर प्रदर्शन करने वाले शेयरों की चाल को महत्व दिया जाता है। रणनीति का आधार यह होता है कि कुछ शेयरों में बनी सकारात्मक या नकारात्मक गति कुछ समय तक जारी रह सकती है।
- लो वोलैटिलिटी** : इसमें अपेक्षाकृत कम उतार-चढ़ाव वाले शेयरों पर ध्यान दिया जाता है। इसका उद्देश्य पोर्टफोलियो में बाजार की तुलना में उतार-चढ़ाव को नियंत्रित करने की कोशिश करना होता है।

साधारण इंडेक्स फंड किसी तय इंडेक्स की संरचना को दोहराने की कोशिश करते हैं। उदाहरण के लिए, किसी इंडेक्स में जिस कंपनी का जितना वजन है, फंड भी लगभग उसी अनुपात में उसमें निवेश करता है। स्मार्ट बीटा फंड इससे अलग तरीके से काम करते हैं। इनमें शेयरों का चयन और उनका वजन पहले से तय नियमों के आधार पर किया जाता है। यानी फंड मैनेजर की व्यक्तिगत पसंद के बजाय किसी निर्धारित रणनीति या फैक्टर को प्राथमिकता दी जाती है। यही वजह है कि स्मार्ट बीटा को सक्रिय और निष्क्रिय निवेश के बीच की रणनीति के तौर पर देखा जाता है। इसमें सक्रिय फंड की तरह अलग-अलग विशेषताओं वाले शेयर चुने जाते हैं, लेकिन चयन प्रक्रिया नियम-आधारित होती है।

कैसे अलग होता है पोर्टफोलियो पारंपरिक बाजार पूंजीकरण आधारित इंडेक्स में बड़ी कंपनियों का वजन उनके बाजार मूल्य के आधार पर अधिक होता है। स्मार्ट बीटा रणनीति में ऐसा जरूरी नहीं है। मान लीजिए कोई फंड क्वालिटी फैक्टर पर आधारित है। तब वह बाजार पूंजीकरण की बजाय कंपनियों की वित्तीय गुणवत्ता से जुड़े मानकों के आधार पर शेयरों का चयन कर सकता है। इसी तरह मोमेंटम फंड में हाल की कीमत की चाल महत्वपूर्ण हो सकती है।



निवेशकों को क्या फायदे मिलेंगे

- नियम-आधारित निवेश : शेयरों के चयन के लिए पहले से निर्धारित नियम होते हैं। इससे निवेश प्रक्रिया अपेक्षाकृत व्यवस्थित और पारदर्शी रहती है।
- कम लागत की संभावना : सक्रिय रूप से संचालित फंड की तुलना में स्मार्ट बीटा फंड की लागत आम तौर पर कम हो सकती है, हालांकि हर फंड का वास्तविक खर्च अलग होता है।
- विशेष रणनीति का विकल्प : निवेशक वैल्यू, क्वालिटी, मोमेंटम या लो वोलैटिलिटी जैसे किसी खास फैक्टर पर आधारित रणनीति चुन सकते हैं।
- पोर्टफोलियो में विविधता : पारंपरिक इंडेक्स से अलग कंपनियों और अलग वजन वाली कंपनियों में निवेश होने के कारण यह निवेश पोर्टफोलियो में एक अलग रणनीतिक एक्सपोजर दे सकता है।

सेक्टर या शेयरों का झुकाव बढ़ेगा

फैक्टर आधारित निवेश का एक दूसरा जोखिम कंसंट्रेशन है। किसी खास नियम के कारण पोर्टफोलियो में कुछ सेक्टर या कंपनियों की हिस्सेदारी अपेक्षाकृत अधिक हो सकती है। ऐसे में यदि उस सेक्टर या कंपनियों के समूह का प्रदर्शन कमजोर रहता है तो पूरे फंड के रिटर्न पर असर पड़ सकता है। इसलिए फंड की शीर्ष होल्डिंग, सेक्टर आवंटन और इंडेक्स की निर्माण पद्धति को समझना जरूरी है।

बार-बार रीबैलेंसिंग से बड़ेगी लागत

कुछ स्मार्ट बीटा रणनीतियों में समय-समय पर पोर्टफोलियो को रीबैलेंस किया जाता है। यानी तय नियमों के अनुसार कुछ शेयरों का वजन बढ़ाया या घटाया जाता है और कुछ शेयरों को शामिल अथवा बाहर किया जाता है। मोमेंटम जैसी रणनीतियों में यह बदलाव अपेक्षाकृत अधिक हो सकता है। ज्यादा बदलाव का मतलब लेनदेन की लागत और पोर्टफोलियो में शेयरों के आने-जाने की दर बढ़ना हो सकता है। इसका असर फंड के वास्तविक रिटर्न पर पड़ सकता है।

सैलरी आते ही पैसा खत्म हो जाता है तो बदलें कुछ आदतें

बिजनेस डेस्क

हर महीने सैलरी आते ही लगता है कि इस बार खर्च संभालकर चलेंगे, लेकिन कुछ ही दिनों बाद खाते का बैलेंस तेजी से कम होने लगता है। महीने के आखिर में जरूरी खर्चों के लिए भी पैसों का हिसाब लगाना पड़ता है। ऐसी स्थिति को हमेशा कम आय का नतीजा मानना सही नहीं है। कई बार बिना बजट खर्च करना, छोटी-छोटी खरीदारी को नजरअंदाज करना और बचत को महीने के आखिर के लिए छोड़ देना भी आर्थिक दबाव की बड़ी वजह बनता है। पैसे को बेहतर तरीके से मैनेज करने के लिए बहुत जटिल वित्तीय रणनीति की जरूरत नहीं होती। कुछ आसान आदतों को नियमित रूप से अपनाना आय और खर्च के बीच बेहतर संतुलन बनाया जा सकता है।

सैलरी आते ही पहले बचत करें

सबसे आम गलती यह होती है कि लोग पूरे महीने खर्च करने के बाद बची रकम को बचत करने के लिए रखते हैं। व्यवहार में अक्सर महीने के अंत तक बचने के लिए बहुत कम पैसा रह जाता है। इसका आसान तरीका है। 'पहले बचत, फिर खर्च'। सैलरी खाते में आते ही तय रकम को अलग बचत खाते या निर्धारित निवेश में भेज दें। इससे खर्च करने के लिए उपलब्ध पैसा अपने आप सीमित हो जाएगा। उदाहरण के लिए, यदि किसी व्यक्ति की मासिक आय 50,000 रुपये है तो वह अपनी क्षमता के अनुसार पहले ही 5,000 या 10,000 रुपये अलग कर सकता है। इसके बाद बाकी रकम से महीने का खर्च चलाया जाए। बचत की राशि छोटी हो तो भी नियमितता ज्यादा महत्वपूर्ण है। इससे महीने के बीच में पैसा खत्म होने की संभावना कम होगी।

» कमाई कितनी है, इससे ज्यादा जरूरी है उसका सही बंटवारा

» पहले बचत, फिर खर्च और निवेश का नियम अपनाएं

» महीने के आखिर में होने वाली पैसों की तंगी से बच सकेंगे



माह की शुरुआत में बनाएं बजट

सैलरी आने के बाद बिना योजना के खर्च शुरू करना बजट बिगड़ाने का सबसे आसान तरीका है। इसलिए महीने की शुरुआत में ही जरूरी खर्चों की सूची बनाएं। सबसे पहले किराया, ईंधन, बिजली-पानी, राशन, स्कूल फीस, बीमा प्रीमियम और दूसरी अनिवार्य जरूरतों के लिए रकम अलग करें। इसके बाद यात्रा, खरीदारी, मनोरंजन और बाहर खाने जैसे खर्चों के लिए सीमा तय करें। बजट का मतलब हर खर्च रोकना नहीं है। इसका उद्देश्य यह तय करना है कि किस मद में कितना पैसा खर्च किया जा सकता है। यदि महीने की शुरुआत में ही 50,000 की आय में से 25,000 जरूरी खर्चों के लिए निर्धारित हैं और 10,000 रुपये बचत या निवेश के लिए अलग कर दिए गए हैं, तो बाकी 15,000 ही वैकल्पिक खर्चों के लिए उपलब्ध होंगे। इससे महीने के बीच में पैसा खत्म होने की संभावना कम होगी।

छोटे खर्चों को नजरअंदाज न करें

बजट अक्सर किसी एक बड़े खर्च से नहीं, बल्कि कई छोटे खर्चों से बिगड़ता है। रोज की कॉफी, ऑनलाइन खाना, कैश, छोटी-मोटी खरीदारी, मनोरंजन और ऐसे डिजिटल सब्सक्रिप्शन जिनका इस्तेमाल बहुत कम होता है इनकी कुल रकम महीने के अंत में काफी बड़ी हो सकती है। इसलिए कम से कम एक महीने तक हर खर्च लिखने की आदत डालें। मोबाइल के नोट्स, डायरी या किसी खर्च ट्रैकिंग ऐप का इस्तेमाल किया जा सकता है। महीने के अंत में खर्चों को तीन हिस्सों में बांटे। जरूरी, उपयोगी और गैर-जरूरी। इसके बाद देखें कि किन खर्चों को कम किया जा सकता है। मान लीजिए रोजाना 100 का छोटा खर्च हो रहा है। महीने में यह करीब 3,000 और सालभर में करीब 36,500 हो सकता है।

इमरजेंसी फंड को प्राथमिकता

बजट और बचत के साथ आपातकालीन कोष यानी इमरजेंसी फंड भी जरूरी है। अचानक नौकरी में रुकावट, घर से जुड़ी जरूरत, वाहन की मरम्मत या कोई अप्रत्याशित खर्च आने पर अगर अलग पैसा नहीं है तो व्यक्ति को निवेश तोड़ना पड़ सकता है या क्रेडिट कार्ड और कर्ज पर निर्भर होना पड़ सकता है। इमरजेंसी फंड का उद्देश्य ज्यादा रिटर्न कमाना नहीं, बल्कि जरूरत के समय पैसा उपलब्ध रखना है। इसे ऐसे विकल्प में रखना चाहिए जहां जरूरत पड़ने पर रकम आसानी से निकाली जा सके।

निवेश को आदत बनाएं

सिर्फ पैसा बचाकर रखना पर्याप्त नहीं है। लंबे समय के वित्तीय लक्ष्यों के लिए बचत के साथ निवेश भी जरूरी हो सकता है। निवेश का विकल्प चुनते समय लक्ष्य, अवधि और जोखिम क्षमता को ध्यान में रखना चाहिए। नियमित निवेश के लिए एसआईपी एक तरीका हो सकता है। इसमें हर महीने एक तय रकम न्यूउअल फंड योजना में निवेश की जाती है। हालांकि, न्यूउअल फंड बाजार जोखिम के अधीन होते हैं और रिटर्न की गारंटी नहीं होती।



सैलरी का आसान बंटवारा करें

- **जरूरी खर्च**: घर, राशन, बिजली, ईंधनआई और दूसरी अनिवार्य जरूरतें।
- **बचत**: भविष्य की जरूरतों और बड़े खर्चों के लिए।
- **निवेश**: लंबे समय के वित्तीय लक्ष्यों के लिए।
- **वैकल्पिक खर्च**: घूमना, मनोरंजन, खरीदारी और दूसरी इच्छाओं पर खर्च।
- इस बंटवारे को अपनी वास्तविक आय और जिम्मेदारियों के अनुसार बदला जा सकता है।

क्रेडिट कार्ड और ईएमआई पर भी रखें नजर

अगर हर महीने सैलरी का बड़ा हिस्सा पुरानी ईएमआई या क्रेडिट कार्ड भुगतान में चला जाता है तो बचत और निवेश के लिए रकम निकालना मुश्किल होगा। इसलिए नए कर्ज लेने से पहले यह देखना जरूरी है कि उसकी मासिक किस्त बजट पर कितना दबाव डालेगी। क्रेडिट कार्ड का इस्तेमाल सुविधा के लिए किया जा सकता है, लेकिन ऐसा खर्च नहीं करना चाहिए जिसे समय पर चुकाना मुश्किल हो। ब्याज और लेट फीस जैसी लागत छोटे खर्च को भी महंगा बना सकती है।

सिर्फ हर महीने निवेश करना काफी नहीं, सही फंड का चयन और लंबी अवधि तक अनुशासन भी जरूरी

एसआईपी से उम्मीद के मुताबिक नहीं बन रहा पैसा, तो कुछ गलतियों से बचें

सुझाव

बिजनेस डेस्क

व्यवस्थित निवेश योजना यानी एसआईपी आज छोटे और बड़े निवेशकों के बीच लंबी अवधि में संपत्ति बनाने का लोकप्रिय माध्यम बन चुकी है। हर महीने तय राशि निवेश करने की सुविधा के कारण नौकरीपेशा और सीमित आय वाले लोग भी धीरे-धीरे बड़ा कोष तैयार करने की उम्मीद रखते हैं। लेकिन कई निवेशकों की शिकायत रहती है कि वर्षों तक एसआईपी चलाते के बाद भी पैसा उनकी उम्मीद के मुताबिक नहीं बढ़ रहा। ऐसे में वे अक्सर फंड, बाजार या फंड प्रबंधक को जिम्मेदार मान लेते हैं। अक्सर में एसआईपी कोई ऐसा निवेश उत्पाद नहीं है, जो निश्चित या गारंटीशुद्ध रिटर्न देता हो। यह केवल नियमित अंतराल पर निवेश करने का तरीका है। निवेश का अंतिम परिणाम इस बात पर निर्भर करता है कि हर महीने कितनी राशि लगाई जा रही है, किस प्रकार के न्यूउअल फंड का चयन किया गया है, निवेश का लक्ष्य और अवधि क्या है, बाजार की स्थिति कैसी है और निवेशक किसने समस्त तक लगातार निवेश बनाए रखा है। यदि एसआईपी उम्मीद के मुताबिक नतीजे नहीं दे रही है तो बाहर निकलने से पहले निवेशकों को अपनी रणनीति की इन पांच महत्वपूर्ण कमियों की जांच करनी चाहिए।

लक्ष्य के मुकाबले बहुत कम

है एसआईपी की राशि

एसआईपी में सबसे आम गलती यह होती है कि निवेशक पहले यह तय करता है कि वह हर महीने कितनी रकम आसानी से बचा सकता है, लेकिन यह नहीं देखता कि उसके वित्तीय लक्ष्य को हासिल करने के लिए वास्तव में कितने लक्ष्य की जरूरत हैं। 2,000 या 5,000 रुपये की मासिक एसआईपी निवेश की अच्छी शुरुआत हो सकती है, लेकिन हर लक्ष्य के लिए यह रकम पर्याप्त नहीं होती। मसलन, यदि कोई व्यक्ति पांच साल में 50 लाख या एक करोड़ रुपये का कोष बनाना चाहता है, तो केवल 5,000 रुपये मासिक निवेश से लक्ष्य तक पहुंचना संभव नहीं होगा। इसलिए निवेश की शुरुआत करते समय सवाल केवल यह नहीं होना चाहिए कि हर महीने कितना निवेश कर सकता हूँ, बल्कि यह होना चाहिए कि अपने लक्ष्य तक पहुंचने के लिए कितना निवेश करना जरूरी है। इसे एक उदाहरण से समझा जा सकता है। यदि कोई निवेशक पांच साल तक हर महीने 5,000 रुपये की एसआईपी करता है और औसतन 12 प्रतिशत वार्षिक रिटर्न मान लिया जाए, तो उसके पास करीब 4.1 लाख रुपये का कोष बन सकता है। यदि उसका लक्ष्य पांच लाख रुपये है तो वह लगभग 90 हजार रुपये पीछे रह जाएगा। इसी अनुमान रिटर्न और औसत में पांच लाख रुपये के लक्ष्य तक पहुंचने के लिए करीब 6,100 रुपये मासिक निवेश की जरूरत पड़ सकती है। आय बढ़ने के साथ एसआईपी की रकम बढ़ानी भी जरूरी है।

लक्ष्य और अवधि के हिसाब

से गलत फंड चुनना

हर न्यूउअल फंड हर निवेशक और हर लक्ष्य के लिए उपयुक्त नहीं होता। फंड चुनते समय केवल ज्यादा रिटर्न देखने के बजाय निवेश की अवधि, लक्ष्य और जोखिम उठाने की क्षमता को प्राथमिकता देनी चाहिए। उदाहरण के लिए, तीन साल बाद घर खरीदने के लिए पैसा जुटा रहे निवेशक और 20 साल बाद सेवानिवृत्ति के लिए निवेश करने वाले व्यक्ति की रणनीति एक जैसी नहीं हो सकती। लंबी अवधि वाले निवेशक अपेक्षाकृत अधिक उतार-चढ़ाव सहन कर सकते हैं, जबकि कम अवधि के लक्ष्य के लिए बहुत अधिक जोखिम वाले इविवर्टी फंड परेशानी पैदा कर सकते हैं। मिड और स्मॉल कैप शेयरों में ज्यादा निवेश करने वाले फंड लंबी अवधि में बेहतर वृद्धि की संभावना दे सकते हैं, लेकिन इनमें उतार-चढ़ाव भी काफी अधिक हो सकता है।

पिछले शानदार रिटर्न के पीछे भागना

कई निवेशक ऐसे न्यूउअल फंड चुन लेते हैं, जिन्होंने पिछले एक, तीन या पांच साल में सबसे ज्यादा रिटर्न दिया हो। लेकिन किसी फंड का पिछला प्रदर्शन भविष्य में उसी तरह के रिटर्न की गारंटी नहीं देता। आज सबसे बेहतर प्रदर्शन करने वाला फंड आने वाले वर्षों में भी शीर्ष पर रहेगा, यह जरूरी नहीं है। इसी तरह कुछ समय के लिए कमजोर प्रदर्शन करने वाला फंड भी हर स्थिति में खराब निवेश साबित नहीं होता। बाजार के अलग-अलग दौर में विभिन्न फंडों का प्रदर्शन बदल सकता है। निवेशकों को किसी फंड का चयन करते समय यह देखना चाहिए कि उसका प्रदर्शन अलग-अलग बाजार परिस्थितियों में कितना स्थिर रहा है।

बाजार को समय देने के बजाय बाजार का समय पकड़ने की कोशिश

एसआईपी की सबसे बड़ी ताकत नियमित निवेश और अनुशासन है। इसके बावजूद कई निवेशक बाजार बढ़ने पर उत्साह से निवेश करते हैं, लेकिन बाजार गिरे तो एसआईपी रोक देते हैं। उन्हें लगता है कि बाजार और नीचे आने पर दोबारा निवेश शुरू करेंगे। समस्या यह है कि बाजार का सबसे निचला स्तर और सबसे ऊंचा स्तर पहले से तय करना बेहद मुश्किल है। कब बाजार गिरेगा और कब तेजी से ऊपर जाएगा, इसका सटीक अनुमान लगाना आसान नहीं है। नियमित एसआईपी में बाजार की अलग-अलग स्थितियों में निवेश जारी रहता है।

क्या करें निवेशक

यदि आपको एसआईपी उम्मीद के मुताबिक आने नहीं बढ़ रही है तो सबसे पहले घबराकर निवेश बंद करने या फंड बेचने की जरूरत नहीं है। अपनी पूरी निवेश योजना की समीक्षा करें। देखें कि एसआईपी की राशि लक्ष्य के अनुरूप है या नहीं, फंड आपके निवेश अवधि और जोखिम क्षमता के हिसाब से सही है या नहीं और कहीं आप बार-बार बाजार के उतार-चढ़ाव के आधार पर निवेश के फैसले तो नहीं बदल

बहुत जल्दी बड़े रिटर्न की उम्मीद करना

एसआईपी को कुछ लोग जल्दी पैसा बनाने का साधन समझ लेते हैं, जबकि यह मुख्य रूप से लंबी अवधि में अनुशासित निवेश की रणनीति है। शुरुआती वर्षों में कोष की वृद्धि अपेक्षाकृत धीमी दिखाई दे सकती है, क्योंकि निवेशित राशि अभी बहुत बड़ी नहीं होती। समय के साथ नियमित निवेश जारी रहने पर कुल निवेश राशि बढ़ती है और यदि निवेश को बढ़ने का पर्याप्त समय मिलता है तो चक्रवृद्धि का प्रभाव भी अधिक दिखाई दे सकता है। निवेश से होने वाली संभावित कमाई यदि निवेश में बनी रहती है, तो वह भी आगे रिटर्न पैदा करने में योगदान दे सकती है।

रहे। जरूरत पड़ने पर एसआईपी की रकम बढ़ाई जा सकती है, फंड चयन की समीक्षा की जा सकती है और अलग-अलग निवेश माध्यमों में राशि के बंटवारे पर भी विचार किया जा सकता है। कोई एक ऐसा जादूई फंड नहीं है, जो हर समय सबसे बेहतर रिटर्न दे। बेहतर रणनीति वही है, जो आपके लक्ष्य और जोखिम क्षमता के अनुरूप हो और जिसे आप लंबे समय तक अनुशासन के साथ जारी रख सकें।

एनसीएल 2026 क्रिकेट लीग का सांसद सुभाष बराला ने किया शुभारंभ खेलों से अनुशासन, नेतृत्व और राष्ट्रसेवा की भावना होती है विकसित : बराला

हरिभूमि न्यूज़ ▶▶फतेहाबाद

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में सेवा, समर्पण और जनभागीदारी की भावना के साथ बोदीवाली में आयोजित नमो क्रिकेट लीग का शुभारंभ राज्यसभा सांसद सुभाष बराला ने बतौर मुख्य अतिथि किया। इस अवसर पर उन्होंने खिलाड़ियों से संवाद कर उनका उत्साहवर्धन किया तथा प्रतियोगिता में भाग लेने वाले सभी खिलाड़ियों को शुभकामनाएं दीं। समाजसेवी अशोक भुक्कर ने सांसद का यहां पहुंचने पर स्वागत किया। खिलाड़ियों को संबोधित करते हुए सांसद सुभाष बराला ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देश में ‘सेवा ही संकल्प’ की भावना को मजबूत करते हुए जनसेवा को विकास और राष्ट्र निर्माण से जोड़ा है। प्रधानमंत्री के जन्मदिवस के अवसर पर खेल प्रतियोगिता का आयोजन युवाओं की ऊर्जा को सकारात्मक दिशा देने और समाज में स्वस्थ जीवनशैली, अनुशासन तथा टीम भावना को बढ़ावा देने का सार्थक माध्यम है। उन्होंने कहा कि



फतेहाबाद। बोदीवाली में खिलाड़ियों को संबोधित करते सांसद सुभाष बराला।

पीएम मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार ने खेलों की केवल प्रतियोगिता तक सीमित न रखकर युवा शक्ति और राष्ट्र निर्माण का महत्वपूर्ण माध्यम बनाया है। ‘खेलो इंडिया’ के माध्यम से गांवों और जिलों से खेल प्रतिभाओं की पहचान, प्रशिक्षण, खेल सुविधाओं के विस्तार तथा खिलाड़ियों को आगे बढ़ने के अवसर उपलब्ध कराने पर विशेष जोर दिया जा रहा है। उन्होंने कहा कि फिट इंडिया और खेलो इंडिया जैसी पहल युवाओं को स्वस्थ एवं सक्रिय जीवनशैली अपनाने के लिए प्रेरित कर रही हैं। प्रधानमंत्री ने हाल ही में खेलों इंडिया संवाद में भी खेलों को विकसित भारत के निर्माण में खेल शक्ति और युवा

शक्ति को जोड़ने का माध्यम बताया है। उन्होंने कहा कि खेल भावना से सशक्त युवा ही सशक्त समाज और विकसित भारत की मजबूत नींव तैयार कर सकते हैं। युवाओं की ऊर्जा को राष्ट्र निर्माण, सेवा और सकारात्मक गतिविधियों से जोड़ना आज की सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकता है। इस अवसर पर जिला परिषद चेयरमैन प्रतिनिधि सुभाष खिचड़, भीम लाम्बा, अनिल सिहाग, अशोक भूकर, जसवंत माचरा, सतबीर मेहुवाला, सुभाष सरपंच, सुभाष फौजी, बंसीलाल, बलजीत झाझड़िया, गोपाल, संदीप शर्मा, रघुबीर बोदीवाली, विनोद तायल तथा नीरज चौधरी सहित अनेक गणमान्य लोग मौजूद रहे।

युवाओं को नशे से दूर करने व सदमार्ग पर लाने का खेल एक महत्वपूर्ण अंग : बाबा ब्रह्म दास

फतेहाबाद। नशामुक्ति सेना के सहयोग से उत्तर भारत की सबसे बड़ी पहली टैनिंग बाल गम्भो लीग क्रिकेट का शुभारंभ डेरा बाबा भूगण शाह के गद्दीशेन महंत बाबा ब्रह्म दास महाराज ने किया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए बाबा ब्रह्मदास महाराज ने कहा कि युवाओं को नशे से दूर करने व सदमार्ग पर लाने का खेल एक महत्वपूर्ण अंग है। उन्होंने कहा कि नशामुक्ति सेना के अध्यक्ष भवानी सिंह जिस निःस्वार्थ भाव से नशे के विरुद्ध अपनी लड़ाई को लड़ रहे हैं, वह अब एक टीम नहीं कारवां बन गया है। उन्होंने भवानी सिंह को आशीर्वाद देते हुए कहा कि उनका यह प्रयास एक दिन जरूर रंग लाएगा। नशामुक्ति सेना के अध्यक्ष भवानी सिंह ने कहा कि यह क्रिकेट लीग उत्तर भारत की सबसे बड़ी क्रिकेट लीग है। पूरे उत्तर भारत में सबसे ज्यादा यदि टीमों का रजिस्ट्रेशन हुआ है, वह फतेहाबाद में हुआ है। उन्होंने कहा कि उनका एक ही मकसद है कि किस तरह से युवाओं को नशे से बचाया जा सके। भवानी सिंह ने बताया कि फतेहाबाद के मैच पांच दिन लगातार चलेंगे। आज पहला मैच गोवं बाह्यगवाला व गिरोह इलेवन के बीच हुआ है। इस लीग में प्रथम आने वाली टीम को 31 हजार, दूसरे स्थान पर आने वाली टीम को 21 हजार रुपये की राशि दी जाएगी। भवानी सिंह ने बताया कि इस क्रिकेट लीग का लाईव प्रसारण 14 ओंटीटी चैनल पर हो रहा है। इस अवसर पर एसएम कालेज के प्रधान राजीव बतरा, सचिव विनोद मेहता, सुनील सक्देवा, सुशील मानव, प्राचार्य गुरचरण दास, व्यापार मण्डल के प्रधान रमेश तंजजा, नरेश टांडू, मंगल मितल आदि मौजूद रहे।



फतेहाबाद। नमो क्रिकेट लीग का शुभारंभ करते बाबा ब्रह्मदास जी महाराज।

खबर संक्षेप

52 वरिष्ठ नागरिकों की हुई स्वास्थ्य जांच

फतेहाबाद। वरिष्ठ नागरिक परिषद फतेहाबाद के तत्वावधान में तथा नागरिक अस्पताल फतेहाबाद के मुख्य चिकित्सा अधिकारी कार्यालय के सहयोग से बाल भवन फतेहाबाद में प्रधान ईश्वर देवी सेठी की अध्यक्षता में वरिष्ठ नागरिकों के लिए निःशुल्क स्वास्थ्य जांच कैम्प का आयोजन किया गया। परिषद के सचिव सुशील सिंह बिश्रौई ने बताया कि कैम्प में नागरिक अस्पताल से रिटायर्ड डिप्टी सीएमओ संगीता अबरोल के नेतृत्व में आई टीम में 52 वरिष्ठ नागरिकों के स्वास्थ्य की जांच की। जांच के उपरान्त जरूरतमंद मरीजों को निःशुल्क दवाइयां भी वितरित की गईं तथा स्वास्थ्य संबंधी आवश्यक परामर्श दिया गया।

महिला महाविद्यालय में जागरूकता सत्र संपन्न

फतेहाबाद। महिला महाविद्यालय में जागरूकता सत्र’ का आयोजन हरिभूमि न्यूज, रतिया। एसडीएस राजकीय महिला महाविद्यालय, रतिया में शारीरिक शिक्षा विभाग द्वारा छात्राओं के लिए ‘मासिक धर्म स्वच्छता जागरूकता सत्र’ का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य छात्राओं को मासिक धर्म के दौरान स्वच्छता, स्वास्थ्य, पोषण एवं व्यक्तिगत देखभाल के प्रति जागरूक करना था। सत्र में सहायक प्रो. रिया ने छात्राओं को मासिक धर्म के दौरान स्वच्छता बनाए रखने, सुरक्षित एवं स्वच्छ मासिक धर्म उत्पादों के उपयोग, पर्याप्त पानी पीने तथा पौष्टिक आहार लेने के महत्व के बारे में जानकारी दी।

मात्र 8 मिनट में ब्लड बैंक पहुंचे सेवादार पंकज इन्सां

जरूरतमंद महिला के लिए किया रक्तदान

हरिभूमि न्यूज़ ▶▶फतेहाबाद

शहर के हुडा सेक्टर स्थित सद्भावना अस्पताल में भर्ती एक महिला मरीज की सर्जरी के लिए ओ-पॉजिटिव रक्त की तत्काल आवश्यकता पड़ने पर डेरा सच्चा सौदा के सेवादार पंकज इन्सां ने तत्परता दिखाते हुए रक्तदान किया। सूचना मिलते ही पंकज इन्सां मात्र 8 मिनट के रिकॉर्ड समय में नागरिक अस्पताल के ब्लड बैंक पहुंचे और रक्तदान कर मरीज की जान बचाने में मदद की। जानकारी के अनुसार, एमसी कॉलोनी निवासी हरजीत कौर पत्नी वेद प्रकाश की सद्भावना अस्पताल में सर्जरी होनी थी, जिसके लिए डॉक्टरों ने तुरंत ओ-पॉजिटिव रक्त की व्यवस्था करने को कहा था। परिजनों द्वारा संपर्क किए जाने पर डेरा सच्चा सौदा की ब्लाड डोनेशन सेवा से जुड़े सेवादार पंकज इन्सां बिना कोई समय गंवाए तत्काल ब्लड बैंक पहुंचे और अपने रक्त की यूनिट दान की। रक्तदान के बाद मरीज हरजीत कौर के परिजनों ने सेवादार पंकज इन्सां का आभार प्रकट किया। परिजनों ने संकट के समय में मिली इस त्वरित सहायता के लिए संस्था द्वारा संचालित टू ब्लड पंप मुहिम की सराहना करते हुए कहा कि जरूरत के समय तुरंत रक्त उपलब्ध



होने से उन्हें बहुत बड़ी मानसिक व चिकित्सकीय राहत मिली है। रक्तदान करने के बाद सेवादार पंकज इन्सां ने कहा कि किसी संकटग्रस्त व्यक्ति की जान बचना ही मानव जीवन का सच्चा कर्तव्य है। उन्होंने बताया कि डेरा सच्चा सौदा की शिक्षाओं पर चलते हुए सेवादार हमेशा समाज सेवा और जरूरतमंदों की मदद के लिए तत्पर रहते हैं। फतेहाबाद क्षेत्र में सेवादार द्वारा दिखाई गई इस मुस्तैदी और सेवा भावना की स्थानीय लोगों एवं डॉक्टरों द्वारा जमकर सराहना की जा रही है।

29 व 30 सितंबर को डीसी कार्यालय पर 24 घंटे का पड़ाव डालेंगे पेंशनर्स

हरिभूमि न्यूज़ ▶▶फतेहाबाद

पेंशन कोई खैरात नहीं, बल्कि हमारा संवैधानिक अधिकार और हक है। इसकी रक्षा के लिए पेंशनर्स हर स्तर पर संघर्ष करेंगे। इसको लेकर अखिल भारतीय राज्य सरकारी पेंशनर्स फेडरेशन के आह्वान पर आठवें वेतन आयोग का लाभ सभी सेवानिवृत्त कर्मचारियों पर समान रूप से लागू करने तथा अन्य लंबित मांगों को लेकर आगामी 29 और 30 सितंबर को उपायुक्त कार्यालय फतेहाबाद पर 24 घंटे का पड़ाव डाला जाएगा। यह जानकारी रिटायर्ड कर्मचारी संघ फतेहाबाद के जिला प्रधान भोला सिंह, कोषाध्यक्ष रघुनाथ

■ रिटायर्ड कर्मचारी संघ फतेहाबाद के जिला प्रधान भोला सिंह, कोषाध्यक्ष रघुनाथ मेहता तथा जिला सचिव बेगराज ने संयुक्त रूप से दी जानकारी

मेहता तथा जिला सचिव बेगराज ने संयुक्त रूप से दी। प्रदर्शन को लेकर रिटायर्ड कर्मचारी संघ की टीम में 21 सितंबर से टोहाना, जाखल, भूना, भट्टू और फतेहाबाद का दौरा करेगी।

जिला प्रधान भोला सिंह और जिला सचिव बेगराज ने बताया कि केंद्र सरकार द्वारा 31 दिसंबर 2025 से पहले सेवानिवृत्त हुए कर्मचारियों और इसके बाद सेवानिवृत्त होने वाले कर्मियों के बीच भेदभाव

किया जा रहा है। इसके साथ ही विविध विधेयक 2025 के माध्यम से वरिष्ठ नागरिकों के प्रति नकारात्मक रुख अपनाए जाने से देशभर के पेंशनभोगियों में भारी रोष व्याप्त है। उन्होंने आरोप लगाया कि सेवानिवृत्त कर्मचारियों को भविष्य में वेतन आयोग के लाभों से वंचित किए जाने की आशंका जताई जा रही है। उन्होंने कहा कि आठवें वेतन आयोग का लाभ पेंशनरों को देना है या नहीं, इसे सरकार की मर्जी पर छोड़ दिया गया है, जबकि सातवें वेतन आयोग तक ऐसा कभी नहीं हुआ। यह इतिहास में पहली बार है कि पेंशनरों के अधिकारों पर इस तरह की अनिश्चितता खड़ी की गई है।

घरेलू सामान चुराने के आरोपी गिरफ्तार

सिरसा। पुलिस ने रानियां क्षेत्र में एक मकान से घरेलू सामान चोरी की वारदात को सुलझाते हुए दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपियों की निशानदेही पर चोरीशुदा सामान भी बरामद कर लिया है। एबीवीटी स्टाफ प्रभारी ने बताया कि गांव दाणी बगी निवासी मोहन सिंह ने थाना रानियां में शिकायत दी थी कि 1 जुलाई 2026 को दोपहर के समय अज्ञात युवक उसके घर का ताला तोड़कर घरेलू सामान, एक बाइक, चांदी के जेवरों और करीब 10 हजार रुपए की नकदी चोरी कर ले गए। शिकायत के आधार पर थाना रानियां में मामला दर्ज कर जांच शुरू की गई थी। जांच के दौरान एबीवीटी स्टाफ की पुलिस टीम ने महत्वपूर्ण सूचना के आधार पर कार्रवाई करते हुए वारदात में संलिप्त दो आरोपियों को धर दबोचा।

डीडीपीओ ने किया स्कूल का निरीक्षण

फतेहाबाद। सेवा संकल्प अभियान की श्रृंखला के अंतर्गत सेवा मेरा योगदान विषय के तहत ग्राम पंचायत अहरवां में सफाई कर्मचारियों ने राजकीय प्राइमरी स्कूल में विशेष श्रमदान अभियान चलाया गया। अभियान के दौरान जिला विकास एवं पंचायत अधिकारी अनूप सिंह ने विद्यार्थियों व गान्गीणों को अपने आस-पास साफ-सफाई रखने के लिए प्रेरित किया। इसके साथ ही, उन्होंने उपस्थितजनों से आह्वान किया कि वे सेवा संकल्प अभियान के तहत आयोजित की जा रही विभिन्न गतिविधियों में अपनी सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करें, ताकि गांव को एक आदर्श और स्वच्छ ग्राम पंचायत बनाया जा सके। श्रमदान के उपरान्त डीडीपीओ अनूप सिंह ने गांव अहरवां के राजकीय प्राइमरी स्कूल का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने स्कूल में बच्चों के लिए बनने वाले मिड डे मील का भी निरीक्षण किया। उन्होंने भोजन की गुणवत्ता, साफ-सफाई और पौष्टिकता को जांचा।



फतेहाबाद। स्कूल का निरीक्षण करते हुए डीडीपीओ अनूप सिंह।

पानीपत, सोनीपत और हिसार की टीमें बनीं चैंपियन

सिरसा ने अंडर-17 में जीता कांस्य

हरिभूमि न्यूज़ ▶▶सिरसा

शहीद भगत सिंह खेल स्टेडियम में चल रही 59वां हरियाणा स्कूली स्टेट गेम्स की लड़कियों की बास्केटबॉल प्रतियोगिता संपन्न हो गई। तीन आयु वर्गों में प्रदेशभर से अलग-अलग जिलों की 64 टीमों ने दमखम दिखाया। इनमें अंडर-14 में 21, अंडर-17 में 22 और अंडर-19 में 21 टीमें शामिल रही। प्रतियोगिता के समापन पर विजेता, उपविजेता व तृतीय स्थान पर रहने वाली टीमों को ट्रॉफी के साथ नकद पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। अंडर-19 आयु वर्ग में पानीपत की टीम ने पहला स्थान हासिल किया। हिसार की टीम उपविजेता रही, जबकि महेंद्रगढ़ ने तीसरा और करनाल ने चौथा स्थान प्राप्त किया। वहीं अंडर-17 में सोनीपत की टीम विजेता बनी। जींद ने दूसरा, मेजबान सिरसा ने तीसरा और हिसार ने चौथा स्थान हासिल किया। अंडर-14 आयु वर्ग में हिसार की टीम ने बाजी मारी। सोनीपत दूसरे, जींद तीसरे और झज्जर की टीम चौथे स्थान पर रही।



सिरसा। प्रतियोगिता में विजेता रही टीम।

विजेताओं को नकद पुरस्कार के साथ ट्रॉफी

समापन समारोह में जिला शिक्षा अधिकारी सुभाष कुमार फुटेला, सहायक जिला शिक्षा अधिकारी खेल कैवल कंबोज और सहायक जिला मौलिक शिक्षा अधिकारी खेल हरबंस सिंह ने खिलाड़ियों को सम्मानित किया। विजेता टीम को 12 हजार रुपये, उपविजेता को 9 हजार रुपये और तीसरे स्थान पर रही टीम को 6 हजार रुपये का नकद पुरस्कार दिया गया। इसके साथ सभी टीमों को ट्रॉफी भी प्रदान की गई। इस अवसर पर बास्केटबॉल प्रतियोगिता के संयोजक कुलदीप, राकेश सहारण, वरुणजीत सिंह सहित प्रशिक्षक, निर्णायक और खिलाड़ी मौजूद रहे।

आर्यन का चोपटा में जोरदार अभिनंदन

चोपटा। राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय रामपुरा दिल्ली के कक्षा 11 वी के छात्र आर्यन ने करनाल में आयोजित राज्य स्तरीय स्कूल खेल प्रतियोगिता में तीन हजार मीटर दौड़ में पूरे हरियाणा में द्वितीय स्थान प्राप्त कर विद्यालय, गांव और जिले का नाम रोशन किया है। खंड शिक्षा अधिकारी सतबीर सिंह दिढारिया, स्कूल प्रिंसिपल ने इस उपलब्धि पर आर्यन और पूरे विद्यालय परिवार उनके कोच को शुभकामनाएं दी है। आर्यन की इस उपलब्धि से पूरे गांव में खुशी का माहौल है। गांव पहुंचने पर ग्रामीणों ने डीजे के साथ फूल-मालाएं पहनाकर भव्य स्वागत किया और चोपटा से लेकर पूरे गांव में प्रभात फेरी निकाली गई। इस अवसर पर आर्यन ने कहा कि यह सफलता उसकी कड़ी मेहनत, लगन और लगातार प्रयास का परिणाम है। ग्रामीणों ने बताया की आर्यन के अलावा इसके छोटे भाई अनमोल ने भी 1500 मीटर प्रतियोगिता में 7 वा स्थान हासिल किया है।



चोपटा। खिलाड़ी आर्यन का स्वागत करते ग्रामीण।

ये रहे उपस्थित

इस मौके पर अनिल शर्मा, अजयपाल, अमित जांगड़ा, सुखविंदर दिल्ली, महेंद्र खटक, राजेंद्र दिल्ली, मंगेरोम आलंडिया, अजय, रोहतास, नुकेश हुड्डा सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति व समस्त ग्रामवासी उपस्थित रहे।



फतेहाबाद। गांव हिजरावां खुर्द में आयोजित नशामुक्ति शिविर।

फोटो: हरिभूमि

स्वास्थ्य विभाग की ओर से डॉ. दीप मान और आयुष विभाग की ओर से डॉ. कविता ने अपनी-अपनी टीमों के साथ शिविर में पहुंचे नशा पीड़ितों के स्वास्थ्य की गहनता से जांच की। आवश्यकतानुसार पीड़ितों के खून के नमूने लेकर जांच की गई और इसके बाद विशेषज्ञ डॉक्टरों द्वारा उनकी

व्यक्तिगत काउंसलिंग कर उन्हें उचित उपचार व दवाएं वितरित की गईं।नशा मुक्ति टीम के प्रभारी उप निरीक्षक सुन्दरलाल ने पीड़ितों और उनके परिजनों से सीधा संवाद करते हुए उन्हें बिना किसी रुकावट के नियमित रूप से दवाएं लेने और उपचार जारी रखने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि नशे के

चक्रव्यूह से बाहर निकलने के लिए व्यक्ति की अपनी दुर्दृष्टि इच्छाशक्ति सबसे पहली शर्त है। इसके साथ-साथ परिवार का भावनात्मक संबल, समाज का सहयोग, पुलिस का मार्गदर्शन और स्वास्थ्य विभाग की चिकित्सकीय सहायता बेहद अहम भूमिका निभाती है। शिविर को सफल बनाने में ग्राम पंचायत हिजरावां खुर्द का विशेष सहयोग रहा। हिजरावां कलां के केयरेटेकर एसपीओ निशान सिंह ने क्षेत्रीय युवाओं व नशा पीड़ितों से व्यक्तिगत रूप से संपर्क कर उन्हें जागरूक किया और शिविर तक पहुंचाकर उपचार से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

रतिया में गणेश उत्सव की धूम

महिलाओं ने निकाली कलश यात्रा

■ कलश यात्रा शहर के मुख्य मार्गों से होते हुए निकली, जिसका जगह-जगह पुष्प वर्षा कर स्वागत किया गया

हरिभूमि न्यूज़ ▶▶रतिया

इन दिनों शहर में गणेश उत्सव की धूम है। श्री गणेश सेवा मंडल द्वारा श्री गणेश उत्सव का त्योहार अनाज मंडी में बड़ी श्रद्धा और धूमधाम के साथ मनाया जा रहा है। इसके अलावा शहर में जगह-जगह गणपति बप्पा की मूर्तियां स्थापित की गई हैं और रोजाना विधि-विधान से पूजा-अर्चना की जा रही है। उत्सव के उपलक्ष्य में आज महिलाओं द्वारा भव्य कलश यात्रा भी निकाली गई, जिसमें बड़ी संख्या



रतिया। गणेश उत्सव के उपलक्ष्य में कलश यात्रा निकालते हुए महिलाएं।

में महिलाओं ने सिर पर कलश धारण कर भाग लिया।

कलश यात्रा शहर के मुख्य मार्गों से होते हुए निकली, जिसका जगह-जगह पुष्प वर्षा कर स्वागत किया गया। इस अवसर पर जितेंद्र अग्रवाल, सोहन खिप्पल, लक्की खिप्पल, अशोक सैन, विक्की खिप्पल, सुखविंदर, सुरेश शर्मा, अनमोल मराठा, प्रवीण मराठा, सोनू

सैन, हरमन सोनी, गोल्डी मिड्डा सहित गणेश उत्सव कमेटी के अन्य सदस्य मौजूद रहे और व्यवस्थाओं को संभाला। कमेटी के सदस्यों ने बताया कि गणेश उत्सव के दौरान रोजाना सुबह-शाम गणपति जी की अरती और पूजा का आयोजन किया जा रहा है। आने वाले दिनों में भजन-कीर्तन और भंडारे का भी आयोजन किया जाएगा।

जागरूकता फतेहाबाद पुलिस ने चलाया जिलास्तरीय अभियान

ढाण्ड के राजकीय स्कूल में कार्यक्रम, विद्यार्थियों को साइबर ठगी व ट्रैफिक नियमों के प्रति किया जागरूक

हरिभूमि न्यूज़ ▶▶फतेहाबाद

विद्यार्थियों में सड़क सुरक्षा, साइबर जागरूकता और जिम्मेदार नागरिक व्यवहार की भावना विकसित करने के उद्देश्य से फतेहाबाद पुलिस द्वारा चलाए जा रहे जिलास्तरीय अभियान के तहत राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, गांव ढाण्ड में जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम में विद्यार्थियों को ट्रैफिक नियमों, आपातकालीन सेवा डायल-112, साइबर अपराध से बचाव और सोशल मीडिया के सुरक्षित व संतुलित उपयोग के संबंध में विस्तार से जानकारी दी



फतेहाबाद। ढांड स्कूल में विद्यार्थियों को जागरूक करते ट्रैफिक पुलिस कर्मचारी।

गई। थाना यातायात के एसएसआई राजेंद्र कुमार ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि सड़क पर जरा सी लापरवाही गंभीर हादसे का कारण बन सकती है।

इसलिए दोपहिया वाहन चलाते समय हमेशा हेलमेट का प्रयोग करें, ड्राइविंग के दौरान मोबाइल फोन का उपयोग न करें, निर्धारित गति सीमा का पालन करें और

ट्रैफिक सिग्नल का सम्मान करें। उन्होंने विद्यार्थियों को प्रेरित किया कि वे स्वयं नियमों का पालन करने के साथ-साथ अपने परिवार और आसपास के लोगों को भी सड़क सुरक्षा के प्रति जागरूक करें। साइबर अपराधों से बचाव के

उपाय बताते हुए पुलिस टीम ने विद्यार्थियों को सतर्क किया कि वे किसी भी अनजान लिंक पर क्लिक न करें। इसके अलावा ओटीपी, एटीएम पिन, सीवीवी या अन्य गोपनीय बैंकिंग जानकारी किसी के साथ साझा न करें।

1930 पर संपर्क कर शिकायत दर्ज कराएं

यदि कोई व्यक्ति ऑनलाइन ठगी का शिकार हो जाता है, तो तुरंत साइबर हेल्पलाइन नंबर 1930 पर संपर्क कर अपनी शिकायत दर्ज कराएं। कार्यक्रम के दौरान हरियाणा पुलिस की आपातकालीन सेवा डायल-112 की कार्यप्रणाली समझाई गई और बताया गया कि किसी भी आपात स्थिति में तुरंत इस नंबर पर संपर्क करके पुलिस सहायता प्राप्त की जा सकती है। इसके साथ ही पुलिस टीम ने विद्यार्थियों से सोशल मीडिया के अत्यधिक उपयोग से बचने तथा अपना ध्यान पढ़ाई, खेलकूद और अन्य रचनात्मक गतिविधियों में लगाने का आह्वान किया, ताकि वे एक जागरूक और अनुशासित नागरिक बन सकें।

खबर संक्षेप

विराट भक्ति सत्संग की तैयारियां पूरी, सत्संग आज

सिरसा। डेरा बाबा भूमणशाह की ओर से बाबा श्रीचंद महाराज के जन्मोत्सव पर आयोजित होने वाले पावन भक्ति सत्संग की तैयारियां पूरी कर ली गई हैं। डेरे के सेवक सचिव विनोद एडवोकेट ने बताया कि 20 सितंबर की सुबह भजन कीर्तन और इसके अलावा गद्दीनशीन संत बाबा ब्रह्मदास महाराज प्रवचन करेंगे। सत्संग में आने वाले श्रद्धालुओं के लिए लंगर, चिकित्सा, सुरक्षा व पार्किंग व आवश्यक सेवाएं शुरू हो गई हैं।

डिंग में रामदेव मंदिर मेला कल

डिंग। भादवा सुदी महादशवीं के उपलक्ष्य में 21 सितंबर को पंच परमेश्वर धाम डिंग मंडी स्थित श्री रामदेव मंदिर में वार्षिक मेला आयोजित किया जाएगा। मंदिर पुजारी ज्ञानी राम ने बताया कि सुबह सवा आठ बजे हवन यज्ञ होगा, जबकि सवा नौ बजे मेले की कार्यवाही शुरू होगी। मेले में मिठाई, खिलौने, क्रॉकरी, खान-पान सहित विभिन्न प्रकार की स्टॉलें लगाई जाएंगी।

श्री सालासर बालाजी दरबार में उमड़े श्रद्धालु

चोपटा। नाथसरी चोपटा स्थित श्री सालासर बालाजी दरबार मंदिर में शनिवार को श्रद्धालुओं ने पूजा अर्चना की और मन्त्र पूरी होने पर प्रसाद चढ़ाया। मंदिर परिसर बड़ी संख्या में आई हुई महिलाओं व पुरुषों ने बालाजी की महिमा का गुणगान किया। मान्यता है कि मंदिर में बालाजी की पूजा करने से मनोकामना पूर्ण होने के साथ-साथ कष्टों से छुटकारा मिलता है। सालासर बालाजी दरबार नाथसरी चोपटा के मुख्य पुजारी सेवक लालचंद ने बताया कि दरबार में हजारों की संख्या में बालाजी के भक्त पूजा अर्चना करने के लिए आते हैं। इसी कड़ी में शनिवार को सिरसा, फतेहाबाद हिसार जिलों सहित निकटवर्ती राजस्थान के गांवों से आए श्रद्धालुओं ने बालाजी की प्रतिमा के समक्ष धोक लगाई और मन्त्रों मांगी।

बच्चों को जल संरक्षण के लिए किया प्रेरित

सिरसा। सेवा संकल्प अभियान के अंतर्गत गांव सिकंदरपुर स्थित राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में जल संरक्षण जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में डिस्ट्रिक्ट कंसल्टेंट राकेश सोगलान, बीआरसी राजेश कुमार और बीआरसी सीताराम ने बच्चों को जल संरक्षण के लिए प्रेरित किया। अधिकारियों ने बच्चों को विस्तार से वाटर कंजर्वेशन के महत्व के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि जल ही जीवन है और भविष्य की पीढ़ियों के लिए जल को बचाना हम सभी की जिम्मेदारी है। बच्चों को वर्षा जल संवयन, पानी का पुनः उपयोग, टपकती टॉटियों को बंद रखने और रोजमर्रा की जिंदगी में पानी की बर्बादी रोकने के आसान उपायों के बारे में बताया गया। डिस्ट्रिक्ट कंसल्टेंट राकेश सोगलान ने कहा कि सेवा संकल्प अभियान का मुख्य उद्देश्य ही जन-जागरूकता के माध्यम से समाज में सकारात्मक बदलाव लाना है। जल संरक्षण उसी दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। विद्यालय के प्राचार्य ने सभी अतिथियों का धन्यवाद किया और बच्चों को जल संरक्षण की शपथ दिलाई। इस अवसर पर विद्यालय स्टाफ व बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।

शिविर में औषधीय पौधों का बताया महत्व

सिरसा। सेवा संकल्प अभियान के तहत शनिवार को राजकीय आयुर्वेदिक औषधालय भावदीन में आयुष शिविर आयोजित किया गया। आयुष विभाग की ओर से आयोजित शिविर में लाभार्थियों को औषधीय पौधों के महत्व की जानकारी देने के साथ तुलसी एवं सहजान के पौधों का वितरण भी किया गया। शिविर के दौरान लाभार्थियों को तुलसी के पारंपरिक औषधीय महत्व के बारे में जानकारी दी गई। शिविर में विशेषज्ञों ने बताया कि भारतीय चिकित्सा परंपरा में तुलसी का विशेष स्थान है और इसका पारंपरिक रूप से विभिन्न घरेलू उपयोगों में इस्तेमाल किया जाता रहा है। लोगों को तुलसी के पौधे लगाने तथा उनकी उचित देखभाल करने के लिए प्रेरित किया गया। इसी प्रकार सहजान यानी मेरिंगा के महत्व के बारे में भी जानकारी दी गई। लाभार्थियों को सहजान के पौधे लगाने और उनके संरक्षण के लिए भी प्रेरित किया गया। आयुष विभाग की ओर से लोगों को औषधीय पौधों के उपयोग के संबंध में आवश्यक जानकारी दी गई तथा स्वस्थ जीवनशैली अपनाने के लिए जागरूक किया गया।

हरिभूमि

आवश्यक सूचना

जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-

हरिभूमि, 783, पी.एल.ए., नजदीक टाउन पार्क, हिसार
फोन : 8295154800, 9315429403, 9253681005

हंस मार्केट समेत बाजारों में नगर परिषद-पुलिस की कार्रवाई

फड़ियां हटते ही फिर सजी, 50 दिन बाद कब्जा हटाने नहीं, डराने के लिए चला अभियान

मुनादी के बावजूद दोबारा कब्जे; लोगों का सवाल-एक-दो दिन की कार्रवाई से कैसे सुधरेगी व्यवस्था

हरिभूमि न्यूज ►► फतेहाबाद

शहर में अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई की पोल शनिवार को उस समय खुलती नजर आई, जब करीब 50 दिन बाद नगर परिषद और ट्रैफिक पुलिस की संयुक्त टीम बाजारों में उतरी। लालबती चौक से फव्वारा चौक होते हुए हंस मार्केट तक पहुंची टीम ने सड़क और फुटपाथ पर लगी रेहड़ियां हटवाई और कुछ सामान जब्त भी किया। कार्रवाई की भनक लगते ही अधिकांश दुकानदारों ने सामान समेटकर दुकानों के अंदर कर लिया। लेकिन सवाल यह है कि जिन जगहों से फड़ियां और अतिक्रमण हटाए जाते हैं, वहां कार्रवाई खत्म होते ही दोबारा कब्जे क्यों हो जाते हैं। शनिवार को नगर परिषद के एसआई महेश कुमार और ट्रैफिक थाना प्रभारी जयसिंह के नेतृत्व में टीम ने बाजारों का निरीक्षण किया। इससे पहले मुनादी कर दुकानदारों को दुकान के बाहर सामान नहीं रखने की चेतावनी दी



फतेहाबाद। हंस मार्केट से अतिक्रमण हटवाते ट्रैफिक पुलिस कर्मचारी।

गई थी। इसके बावजूद कई जगह सड़क और फुटपाथ पर सामान व रेहड़ियां मिलीं। टीम ने उन्हें हटवाया और दोबारा अतिक्रमण न करने की हिदायत दी। शहरवासियों का कहना है कि अतिक्रमण के कारण बाजारों में पैदल चलना तक मुश्किल हो जाता है और व्यस्त समय में जाम की स्थिति बनती है। ऐसे में करीब 50 दिन तक अभियान नहीं चलना और फिर एक दिन कार्रवाई करना नगर परिषद की नियमित निगरानी व्यवस्था पर सवाल खड़े करता है। लोगों की मांग है कि अभियान केवल दिखावे

तक सीमित न रहे, बल्कि प्रमुख बाजारों में नियमित निगरानी और कार्रवाई की स्थायी व्यवस्था बनाई जाए। आज अभियान के दौरान टीम ने हंस मार्केट में लगी रेहड़ियों को सड़कों से हटवाया वहीं दुकानदारों द्वारा दुकानों के बाहर रखे गए सामान को भी वहां से हटवा दिया लेकिन जैसे ही टीम मार्केट से निकली पुराने अतिक्रमणकारियों ने फिर से दुकानों के बाहर सामान रखकर कब्जा जमा लिया। कुछ देर पहले तक खुला नजर आ रहा बाजार रेहड़ियों से फिर अट गया।

कार्रवाई के बाद फिर कब्जा हुआ तो जिम्मेदारी किसकी

अतिक्रमण हटाने के बाद कुछ दिनों में वही स्थान दोबारा फिर जाना शहर में पुरानी समस्या है। रेहड़ियां और दुकानों का सामान सड़क तक पहुंचने से यातायात प्रभावित होता है और राहगीरों को भी परेशानी उठानी पड़ती है। ऐसे में नगर परिषद को यह सुनिश्चित करना होगा कि हटई गई फड़ियां दोबारा उसी स्थान पर न लगे। केवल चेतावनी और अस्थायी कार्रवाई के बजाय लगातार निगरानी से ही बाजारों को अतिक्रमण मुक्त रखा जा सकता है। नगर परिषद और ट्रैफिक पुलिस ने स्पष्ट किया कि यातायात व्यवस्था सुचारु रखने और आमजन की आजागी आसान बनाने के लिए अभियान आगे भी जारी रहेगा। अब देखना यह है कि यह अभियान नियमित रूप लेता है या कार्रवाई के बाद फिर वही सड़कों और फुटपाथ अतिक्रमण की चपेट में आ जाते हैं।

फोटो : हरिभूमि

शहीद भगत सिंह स्टेडियम में पीस पोल स्थापित कर दिया विश्व शांति का संदेश

हरिभूमि न्यूज ►► सिरसा

जिले की रोटरी क्लबों के सहयोग सेशहीद भगत सिंह स्टेडियम सिरसा में विश्वशांति एवं सद्भावना के प्रतीक पीस पोल लगाया गया है, जिसका उद्घाटन हिसार मंडलायुक्त गीता भारती व भूपेश मेहता ने किया। मंडलायुक्त गीता भारती ने कहा कि वर्तमान समय में विश्व को शांति, सद्भाव और भाईचारे की सबसे अधिक आवश्यकता है।

उन्होंने कहा कि पीस पोल पर अंकित संदेश मानवता को सही दिशा प्रदान करते हैं और यदि हम इन्हें अपने जीवन में अपनाएं तो समाज में सकारात्मक परिवर्तन



सिरसा। पीस पोल स्थापित करते हुए मंडलायुक्त गीता भारती।

लाया जा सकता है। उन्होंने रोटरी इंटरनेशनल द्वारा विश्वभर में किए जा रहे सेवा कार्यों की सराहना करते हुए कहा कि पोलियो उन्मूलन में रोटरी का योगदान ऐतिहासिक और प्रेरणादायक रहा है। भूपेश मेहता ने कहा कि पीस पोल विश्व शांति का एक सशक्त प्रतीक है। अपने गवर्नर

कार्यकाल के दौरान उन्होंने उत्तर भारत में इस पहल को आगे बढ़ाते हुए देशभगत यूनिवर्सिटी मंडी गोबिंदगढ़, स्पोर्ट्स यूनिवर्सिटी पटियाला, हुसेनीवाला बॉर्डर फिरोजपुर, सेंट्रल पार्क मानसा तथा श्री चैतन्य टेकनो स्कूल सिरसा में पीस पोल स्थापित करवाए।

मुख्यार सिंह डिग्री कॉलेज में सेवा संकल्प

फतेहाबाद। सेवा संकल्प अभियान के तहत मुख्यार सिंह मैमोरियल डिग्री कॉलेज, बहबलपुर में जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के दौरान विद्यार्थियों को सेवा संकल्प अभियान के उद्देश्य एवं सामाजिक जिम्मेदारियों के प्रति जागरूक किया गया। इस अवसर पर विद्यार्थियों द्वारा पोस्टर प्रदर्शनी एवं भाषण कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। विद्यार्थियों ने अपने पोस्टरों एवं भाषणों के माध्यम से सेवा, समाज के प्रति जिम्मेदारी तथा जनकल्याण से जुड़े विभिन्न विषयों पर अपने विचार व्यक्त किए। प्राचार्य ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि विद्यार्थियों को शिक्षा के साथ-साथ समाज के प्रति अपने दायित्वों को समझना चाहिए और सेवा भावना को अपने जीवन का हिस्सा बनाना चाहिए।

विद्यार्थियों ने सीखी मास्क निर्माण की तकनीक व रंगमंच में प्रयोग की बारीकियां

हरिभूमि न्यूज ►► सिरसा

चौधरी देवीलाल विश्वविद्यालय के यूनिवर्सिटी स्कूल फॉर प्रेज्युट स्टडीज के अंतर्गत संचालित बैचलर ऑफ परफॉर्मिंग आर्ट्स (थिएटर, टीवी एवं सिनेमा) पाठ्यक्रम द्वारा बैचलर ऑफ फाइन आर्ट्स के सहयोग से दो दिवसीय मास्क मेकिंग कार्यशाला का आयोजन किया गया। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विजय कुमार ने कहा कि कला एवं रंगमंच विद्यार्थियों की रचनात्मक अभिव्यक्ति और व्यक्तित्व विकास के महत्वपूर्ण माध्यम हैं। उन्होंने कहा कि ऐसी व्यावहारिक कार्यशालाओं



सिरसा। मास्क मेकिंग कार्यशाला में भाग लेते विद्यार्थी।

से विद्यार्थियों को अपनी कल्पनाशीलता, कलात्मक कौशल और तकनीकी दक्षता विकसित करने का अवसर मिलता है। विश्वविद्यालय विद्यार्थियों को अकादमिक शिक्षा के साथ-साथ

कला एवं संस्कृति से जुड़ी गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी के लिए निरंतर प्रोत्साहित करता है। कार्यशाला में कला शिक्षा डीन, यूएससीएस प्रो. काशिफ किदवाई के मार्गदर्शन में किया गया।

डिस्कस थ्रो में अगमजोत कौर ने पाया तीसरा स्थान

हरिभूमि न्यूज ►► सिरसा

भिवानी में आयोजित राज्य स्तरीय एथलेटिक्स प्रतियोगिता की डिस्कस थ्रो स्पर्धा में गांव वैदवाला की अगमजोत कौर पुत्री शहनाज मोकल ने शानदार प्रदर्शन करते हुए तीसरा स्थान हासिल किया। अपनी प्रतिभा और मेहनत के दम पर अगमजोत कौर ने प्रतियोगिता में बेहतर प्रदर्शन कर विद्यालय एवं परिवार का नाम रोशन किया। प्रतियोगिता के दौरान अगमजोत कौर ने बेहतरीन तकनीक और आत्मविश्वास का परिचय देते हुए डिस्कस को शानदार दूरी तक फेंका। अगमजोत कौर वर्तमान में दिल्ली पब्लिक स्कूल सिरसा में



अगमजोत कौर।

उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। विद्यालय प्रबंधन ने कहा कि विद्यार्थियों को शिक्षा के साथ-साथ खेलों में भी बढ़-चढ़कर भाग लेना चाहिए। खेलों से विद्यार्थियों में नैतिक, आत्मविश्वास और नेतृत्व क्षमता का विकास होता है। अगमजोत कौर की उपलब्धि अन्य विद्यार्थियों के लिए भी प्रेरणादायक है।

ऐतिहासिक होगी चौ. देवीलाल जयंती रैली

सिरसा। इनेलो जिलाध्यक्ष जसवीर सिंह जस्सा ने कहा कि आगामी 27 सितंबर को नूंह में प्रस्तावित चौ. देवीलाल जयंती समारोह ऐतिहासिक होगा जिसमें प्रदेशभर से बड़ी संख्या में लोग भाग लेंगे। जस्सा शनिवार को कालावाली हलके के कार्यकर्ताओं की बैठक को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कार्यकर्ताओं से आह्वान किया कि वे घर घर जाकर आमजन को 27 सितंबर की नूंह रैली का निमंत्रण दें। जस्सा ने कहा कि आज सिरसा ही नहीं बल्कि पूरे हरियाणा में जननायक चौधरी देवीलाल जयंती को लेकर खासा उत्साह बना हुआ है और लोग अधिक से अधिक संख्या में इस रैली में भाग लेने के लिए आतुर हैं। जस्सा ने कहा कि सिरसा जिला इस नूंह रैली में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

भट्ट कलां में पशु-पक्षी एंबुलेंस सेवा के लिए आगे आए हाथ

बेजुबानों की सांसों को मिलेगी नई जिंदगी

हरिभूमि न्यूज ►► भट्टकलां

सड़क हादसों या बीमारियों का शिकार होकर तड़पने वाले बेजुबान पशु-पक्षियों की सुरक्षा और च्वरित इलाज के लिए भट्ट कलां में एक सराहनीय पहल की शुरुआत हो रही है। क्षेत्र में जीवों की रक्षा के लिए समर्पित भट्ट कलां पशु-पक्षी सेवा समिति जल्द ही एक विशेष एंबुलेंस सेवा शुरू करने जा रहे हैं। समिति के इस भागीरथ प्रयास को बल देने के लिए क्षेत्र के जाने-माने समाजसेवी संजय उर्फ जंगली ने 11 हजार की सहयोग राशि देकर मुहिम की शुरुआत की है। सहयोग राशि सौंपते हुए समाजसेवी संजय उर्फ



भट्टकलां। एंबुलेंस सेवा के लिए सहयोग राशि सौंपते समाजसेवी संजय।

जंगली ने कहा, कि 11 हजार कोई बहुत बड़ी राशि नहीं है और न ही मैं अकेले पूरी एंबुलेंस का खर्च उठा सकता हूँ, लेकिन बेजुबानों के प्रति

अपनी जिम्मेदारी समझते हुए उन्होंने यह छोटी सी शुरुआत की है। संजय ने क्षेत्र के सभी दानदाताओं और प्रबुद्ध नागरिकों से अपील करते

हुए कहा कि यदि हर व्यक्ति अपनी सामर्थ्य के अनुसार थोड़ा-थोड़ा योगदान दे, तो जल्द ही एक सुसज्जित एंबुलेंस सड़कों पर होगी।

सड़क दुर्घटनाओं में घायल होने वाले जीवों को समय पर अस्पताल पहुंचाना ही इस सेवा का मुख्य उद्देश्य है।



स्लीपकेशन घुमक्कड़ी के साथ मिलेगी भरपूर आराम वाली नींद

आज की भाग-दौड़ मरी जीवनशैली में अधिकतर लोगों को सुकून और चैन मरी नींद की कमी अकसर महसूस होती है। इस कमी को पूरा करने में स्लीपकेशन का ट्रेंड बहुत कारगर साबित होता है। जहां घूमने के साथ ही भरपूर आराम का भी मौका मिलता है। स्लीपकेशन क्या है, इसका ट्रेंड क्यों बढ़ रहा है, आप भी जानना चाहेंगे।

दिल की बीमारी और मानसिक स्वास्थ्य से जुड़ी समस्याओं के बोझ को और बढ़ा रही है।

इसलिए बढ़ रहा स्लीपकेशन का ट्रेंड

यूपस सेंटर फॉर डिजीज कंट्रोल एंड प्रिवेंशन जैसे बड़े हेल्थ ग्रुप्स के दिशा-निर्देशों की मानें, तो ज्यादातर स्वस्थ वयस्कों को बेहतर ढंग से काम करने के लिए हर रात 7 से 9 घंटे की नींद की जरूरत होती है। लेकिन ‘लोकल सर्कलस’ का एक सर्वे बताता है कि आज लगभग 10 में से 6 भारतीय वयस्कों को छह घंटे से भी कम की बिना रुकावट वाली नींद मिलती है। करीब 50 फीसदी से अधिक काम-काजी लोग नींद की कमी से जूझ रहे हैं। इससे दिमाग पर बोझ बढ़ रहा है और वे



थका हुआ महसूस करते हैं। इस ‘स्लीप डेब्ट’ को दूर करने के लिए ही स्लीपकेशन पर जाने का चलन बढ़ रहा है।

टूरिज्म सेक्टर का नया बाजार

आज कई बड़े टूरिज्म कॉर्पोरेट्स ने इस नए बाजार को देखते हुए ऋषिकेश, कुर्ग, केरल, धर्मशाला और उदयपुर के कई प्रीमियम वेलनेस रिजॉर्ट्स में इस उभरते सेक्टर के लिए तैयारी करनी शुरू कर दी है। इन रिजॉर्ट्स के कमरों में टीवी या डिजिटल गैजेट्स की मनाही होती है। कमरों में पूरी तरह सन्नाटा और अंधेरा बनाए रखने के लिए विशेष पर्दों का इस्तेमाल किया जाता है। सोने से पहले लेवेंडर एरोमा थैरेपी और विशेष मेलेटोनिन रिच डाइट या हर्बल टी दी जाती है, जो गहरी नींद लाने में मदद करती है। उत्तराखंड के मारचुला में एक रिजॉर्ट के संचालक करण कहते हैं, ‘आजकल की शहरी जिंदगी से हर कोई बाकिफ है। देर रात तक लैपटॉप पर काम करना, टीवी या मोबाइल देखना, एक ऐसी आदत बन गई है कि उससे छुटकारा नहीं मिल पा रहा। डेडलाइंस को पूरा करने के लिए पेशेवर लोग आधी-आधी रात तक स्क्रीन से चिपके होते हैं। इसका सेहत पर असर पड़ता है। इसलिए स्लीपकेशन के दौरान उनके सुकून का विशेष ध्यान रखा जाता है। कोई डिस्टर्ब न करे ताकि वे साथ आए दोस्तों अथवा परिजनों से बात करें। सुबह के समय उनके लिए योग एवं ध्यान और शाम को संगीत का सेशन रखा जाता है, जिससे कि उनका दिमाग शांत रहे और वे अच्छी नींद ले सकें।’

कवर स्टोरी / अंशु सिंह

हाल के वर्षों में हमारे यात्रा करने के तरीके में एक अलग तरह का बदलाव आ रहा है। तेजी से घूमने-फिरने और व्यस्त शेड्यूल के बजाय अब लोग घुमक्कड़ी के दौरान आराम, शांति और सुकून भरे पलों की तलाश कर रहे हैं। इसे स्लीपकेशन या स्लीप टूरिज्म कहा जा रहा है। यानी एक ऐसी सोच-समझकर की गई धीमी गति वाली यात्रा, जो भाग-दौड़ के बजाय आराम को प्राथमिकता देती है।

सोने के लिए जा रहे घूमने

पेशे से चिकित्सक मेघना सेठ की दिनचर्या कुछ ऐसी रहती थी कि उन्हें नींद पूरी करने के लिए जद्दोजहद करनी पड़ती थी। नींद की इस कमी का असर कहीं न कहीं उनके मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने लगा था। उनके व्यवहार में हल्का चिड़चिड़ापन भी आ गया था, जो उनके पेशे के लिए सही नहीं था। उनके कुछ दोस्तों ने उन्हें कहीं घूमने जाने की सलाह दी और मेघना निकल पड़ीं, दोस्तों के साथ चार दिन के वीकेंड ट्रिप पर। लेकिन पहले दिन के गुजरते ही उन्होंने सबको साफ-साफ कह दिया कि वे अब और कहीं घूमेंगी नहीं, बल्कि कमरे में आराम करेंगी और अपनी नींद पूरी करेंगी। दोस्तों को पहले पहल उनका साथ घूमने से इंकार करना अच्छा नहीं लगा। कुछ देर तक सबने मौन साध लिया। लेकिन फिर मेघना ने उन्हें राजी कर लिया और इस तरह अगले दो दिन वे रिजॉर्ट में ही रहीं। गुरुग्राम के एक एमएनसी में सीनियर एनालिस्ट अमित मिश्रा भी जब कभी फैमिली ट्रिप पर जाते हैं, तो ये सुनिश्चित करते हैं कि वहां उन्हें अपनी नींद पूरी करने का पूरा मौका मिले। इसलिए वे ज्यादा भाग-दौड़ या आस-पास के इलाकों को एक्सप्लोर करने के बजाय रिजॉर्ट में रहकर ही छुट्टियां मनाने को प्राथमिकता देते हैं।



अनोखा होता है स्लीपकेशन का अनुभव

- ▶ इसमें व्यक्ति को सुबह बिना आलार्म के जागना होता है।
- ▶ बादलों को घुमड़ते हुए देखने के साथ कोई गर्म पेय पीना।
- ▶ अपने विचारों को लिखना या पूरी तरह से शांति में बैठना।
- ▶ बिना किसी मंजिल के लंबी सैर पर यूं ही घूमने निकल जाना।
- ▶ इसमें कोई तय कार्यक्रम नहीं होता। हर पल को रिकॉर्ड करने का कोई दबाव नहीं होता।
- ▶ स्लीपकेशन के दौरान धीरे-धीरे कुछ बदलाव महसूस होते हैं।
- ▶ मेडिटेशन से मन शांत होने लगता है।
- ▶ शरीर आराम महसूस करने लगता है।



गजल
डॉ. माणिक विश्वकर्मा ‘नवरंग’

याद नहीं करता कोई भी

याद नहीं करता कोई भी वक्त निकल जाने के बाद
लाथ छोड़ देते हैं अक्सर लोग संगल जाने के बाद

इस जग का दस्तूर यही है सब साथी हैं त्रियायरे के
घुस जाते हैं लोग घरों में सूरज ढल जाने के बाद

रूप-रंग, कौमार्य उसे नित बांधे रखता है गुलशन से
पास नहीं जाता फिर भौंरा गुल के फल जाने के बाद

इश्क हुआ तो बेफिक्री में कुछ भी संभव हो जाता है
ढल जाता है हर सांघे में लौह पिघल जाने के बाद

दिल से जो भी निकलेगा वो लौट नहीं पाएगा फिर से
जैसे लौट नहीं पाता है बीता कल जाने के बाद

केवल आप प्रतीक्षा करिए दिन के ढल जाने का ‘नवरंग’
परवानों की भीड़ लगेगी शम्भा जल जाने के बाद

लंगर / धर्मेन्द्र जोशी

आजकल अधिकतर शहरों की सड़कों पर जगह-जगह ‘कार्य प्रगति पर है!’ के बोर्ड लगे हुए दिख जाते हैं। बोर्ड धुंधला जाते हैं, मगर कार्य को गति नहीं मिल पाती है। प्रगति जमीन पर नहीं बल्कि केवल बोर्ड पर ही लिखी दिखाई देती है। यही वजह है कि जो गड़बड़ पिछली बारिश में नन्हें-नन्हें अवतरित हुए थे, वे अब पाताल के द्वार रूप में अपनी उपस्थिति दर्ज करा रहे हैं। न जाने कितने दो पहिया वाहन सवार पुरुषों, महिलाओं और बच्चों को खुद पर गिरा कर हमेशा के लिए उनकी स्मृति इनमें अंकित हो चुकी है।

इधर, शहर के लोग सड़क पर फैले कीचड़ की फिसलन से हलकान हो रहे हैं और उधर, नेता, अधिकारी, इंजीनियर और ठेकेदार स्वीकृत राशि पर अपनी-अपनी पकड़ बनाने के लिए बेताब दिख रहे हैं। यही कारण है कि जो कार्य तीन महीनों में पूर्ण होना था, वो एक साल तीन महीने के बाद भी अधूरा पड़ा हुआ है। लोगों के घर धूल के गुबार से गुलजार हो रहे हैं। गृहिणियों का गृहकार्य बढ़ चुका है। वे सफाई में हाथ बंटाने के लिए अपने वीटो पावर का उपयोग कर

मेरी कॉलोनी में रहने वाले एक वृद्ध की दिनचर्या वर्षों से नहीं बदली थी। हर शाम वह चारपाई पर बैठकर दरवाजे की ओर टकटकी लगाए रहते। लोग समझते, शायद बेटे का इंतजार है। बेटा महीने में केवल एक बार आता। जल्दबाजी में हाल-चाल पूछता, दवाइयां रखता और कहता, ‘पिताजी, किसी चीज की जरूरत हो तो बता दिया कीजिए।’ वृद्ध मुस्कुरा देते, ‘सब है बेटा कुछ नहीं चाहिए।’

एक सर्द रात वह चुपचाप इस दुनिया से विदा हो गए। घर समेटते समय बेटे ने उनका पुराना तकिया उठाया। तकिया भारी लगा। खोलकर देखा तो उसमें न पैसे थे, न गहने, केवल संभालकर रखी छोटी-छोटी पर्चियां थीं। हर पर्ची पर एक तारीख और अधूरी-सी टीस लिखी थी, ‘आज बहुत मन था कि बेटा थोड़ी देर बैठ जाता।’ ‘आज पहली बार खाना अकेले खाया।’ ‘डॉक्टर ने कहा, बातें करते रहिए। मगर किससे?’ ‘आज बरामदे में दो कप चाय रखी दूसरी ठंडी हो गई।’

सबसे आखिरी पर्ची पर लिखा था, ‘अब उसे बुलाना मता वह बहुत व्यस्त होगा।’ पर्चियां पढ़ते-पढ़ते बेटे की आंखें धुंधला गईं। उसे पहली बार समझ आया कि उसने पिता को हर जरूरत पूरी की, पर उनके अकेलेपन को

कार्य प्रगति पर है!

शहर के लोग सड़क पर फैले कीचड़ की फिसलन से हलकान हो रहे हैं और उधर, नेता, अधिकारी, इंजीनियर और ठेकेदार स्वीकृत राशि पर अपनी-अपनी पकड़ बनाने के लिए बेताब दिख रहे हैं। यही कारण है कि जो कार्य तीन महीनों में पूर्ण होना था, वो एक साल तीन महीने के बाद भी अधूरा पड़ा हुआ है।

घर के पुरुषों को भी बरामदे, कमरों और पोर्च की सफा-सफाई के लिए आदेश देती रहती हैं। इससे बचने के लिए काम-काजी पुरुष वर्ग, बहाने बनाकर अपने कार्यस्थल पर सुबह जल्दी जाते और शाम को विलंब से घर लौटते हैं।

सड़क के किनारे मौजूद गटर और नालियां भी लंबे समय से अपने जीर्णोद्धार के लिए खुली हुई हैं, जिससे जमा गंदे पानी में मच्छरों के झुंड बिना रोक-टोक के



यायावरी करते रहते हैं। उनकी सक्रियता से सरकारी और निजी अस्पताओं में मलेरिया, डेंगू और चिकनगुनिया के मरीजों की लाइन दिन-प्रतिदिन लंबी होती जा रही है।

कुछ जागरूक नागरिकों ने अपने घर के सामने मौजूद जलयुक्त कुंड को पार करने के लिए पट्टिए के अस्थाई पुल का निर्माण कर रखा है। लेकिन सावधानी हटते ही उस पर भी दुर्घटना घटित हो जाती है। मुख्य सड़क से लगे मकान के रहवासी बेचारे जी,

कल संध्या काल में अपनी इलेक्ट्रिक स्कूटी सहित वहीं गटरदोज हो गए। न केवल उनके धवल वस्त्र गंदगी से अलंकृत हुए, उनकी स्कूटी में भी हलचल बंद हो गई। जुगत बाबू की धर्मपत्नी के साथ भी वहीं हादसा हो गया। वे सब्जी मंडी से थैला भरकर ताजी तरकारी लेकर आ रही थीं। छत पर खड़ी पड़ोसन से बात करने में मगन, उन्हें नाली का ध्यान नहीं रहा और वे सब्जी सहित नाली में समा गईं। आस-पास के लोगों ने

लघुकथा / कृति आर.के. जैन

पिता का तकिया



कभी नहीं पढ़ा। उसने तर्किए को सोने से लगा लिया। उस दिन वह पहली बार फूट-फूटकर रोया, क्योंकि दुनिया का सबसे महंगा तकिया वही होता है, जिसमें रुई नहीं, अधूरी प्रतीक्षाएं भरी हों। रिश्ते अभाव से नहीं, उपेक्षा और प्रतीक्षा से दम तोड़ते हैं।



ऑनलाइन शॉपिंग का बढ़ता ट्रेंड ऑफर-रिटर्न ट्रैप से रहें सावधान

फेस्टिव सीजन के साथ ही जमकर शॉपिंग भी शुरू हो जाती है। इसी के चलते ऑनलाइन शॉपिंग में ऑफर्स और कई लालच दिए जाते हैं। इसको अच्छी तरह समझना और इसके जाल में फंसने से बचने के लिए सावधानी जरूरी है।

लाइफस्टाइल / विवेक कुमार

कभी बाजार जाने के लिए समय निकालना पड़ता था, दुकान-दुकान घूमना पड़ता था, फिर भी मनपसंद चीज मिलेगी या नहीं, इसकी कोई गारंटी नहीं होती थी। अब वही खरीदारी मोबाइल स्क्रीन पर कुछ मिनटों में ही हो जाती है। कपड़ों से लेकर कॉस्मेटिक, किचन का सामान, जूते, बैग, बच्चों की चीजें और रोजमर्रा का राशन तक घर बैठे मंगाया जा सकता है। इससे महिलाओं को बहुत सुविधा हुई है। लेकिन इस सुविधा में नई तरह की चुनौतियां और फंसाने वाले जाल भी मौजूद होते हैं।

ऑफर के लालच से बचें: ऑनलाइन बाजार में ग्राहक को आकर्षित करने के लिए लगातार सेल, कूपन, फ्लेश डील, आज आखिरी मौका, सिर्फ दो पीस बाकी, मुफ्त डिलिवरी जैसे संदेश बार-बार इस तरह दोहराए जाते हैं कि आपके दिमाग में बैठ जाएं। ऐसे में कई बार हमें जरूरत नहीं होती, फिर भी हम ढेर सारी चीजें खरीद लेते हैं। क्योंकि ऑनलाइन खरीदारी में एक भ्रम यह बना दिया गया है कि यहां सब कुछ बहुत सस्ता मिल रहा है। ऐसे में लोग सोचते हैं, जब 40 फीसदी तक सस्ता है, तो खरीद ही लेना चाहिए। लेकिन जब हमें किसी चीज की जरूरत न हो, तो उसकी खरीदारी बचत नहीं बल्कि एक तरह का खर्च होता है। इसलिए किसी भी डील को देखकर सबसे पहले खुद से पूछना चाहिए, अगर इस पर छूट नहीं होती, तो क्या मैं इसे खरीदता? अगर जवाब नहीं है, तो इसका मतलब है खरीदारी की जरूरत नहीं थी, बस विज्ञापन के प्रभाव में आकर खरीद लिया। एक बात और याद रखें ऑनलाइन खरीदारी में सबसे बड़ा आकर्षण तस्वीरों का होता है। शानदार रोशनी में खींची गई मॉडल की तस्वीर देखकर कोई ड्रेस बेहद खूबसूरत लग सकती है। लेकिन वास्तविक उत्पाद का रंग, कपड़े की गुणवत्ता या फिट का आकार जरूरी नहीं कि अच्छा ही हो। इसलिए केवल तस्वीर



पर भरोसा करना सही नहीं है। उत्पाद का विवरण पढ़ना भी बहुत जरूरी है।

जरूर पढ़ लें रिव्यू: जब ऑनलाइन खरीदारी करें, तो सबसे कारगर होते हैं पहले के खरीदारों के खरीद संबंधी रिव्यू। इसलिए जब भी ऑनलाइन कोई चीज खरीदें, तो उसके पहले ऑनलाइन रिव्यू जरूर पढ़ें। हालांकि यहां भी हर खरीदार की उसकी अपनी समीक्षा को बिल्कुल सत्य न मान लें। बेहतर है कि कई खरीदारों की प्रतिक्रियाएं पढ़ें, खासकर उन टिप्पणियों को विशेष रूप से देखें, जिनमें उत्पाद की कमियां विस्तार से बताई गई हों।

रेंटिंग स्टार्स से रहें सावधान: जहां तक रेंटिंग की बात है तो रेंटिंग के स्टार देखकर अंतिम निष्कर्ष पर न पहुंचें बल्कि लिखी हुई टिप्पणी का मतलब ज्यादा सच होता है। पांच सितारे देखकर तुरंत प्रभावित होने की बजाय, यह देखना ज्यादा उपयोगी होता है कि ग्राहक ने वास्तव में लिखा क्या है? कई बार हजारों लोगों की अच्छी रेंटिंग के बावजूद आपकी जरूरत के लिए उत्पाद अनुपयुक्त हो सकता है।

जान लें रिटर्न पॉलिसी: ऑनलाइन खरीदारी में एक सबसे बड़ी भूल है कि उत्पाद खरीदने से पहले रिटर्न पॉलिसी न पढ़ना। कई उत्पादों पर रिटर्न उपलब्ध नहीं होता। कुछ पर केवल रिफ्लेसमेंट होता है। जबकि कुछ में रिफंड के लिए विशेष शर्तें होती हैं। कपड़े, कॉस्मेटिक्स, इलेक्ट्रॉनिक्स और व्यक्तिगत उपयोग की वस्तुओं के नियम अलग-अलग हो सकते हैं। इसलिए भुगतान करने से पहले यह देखना चाहिए कि उत्पाद वास्तव में रिटर्न किया जा सकता है या नहीं। कितने दिनों के भीतर किया जा सकता है और रिफंड किस माध्यम से मिलेगा?

सही प्लेटफॉर्म चुनें: सस्ती कीमत देखकर किसी अनजान वेबसाइट पर तुरंत भुगतान करना जोखिमभरा हो सकता है। वेबसाइट का नाम, संपर्क, जानकारी, रिटर्न नीति और भुगतान का विकल्प देखकर ही खरीदारी करनी चाहिए।

किसी तरह अपनी हंसी पर नियंत्रण कर उन्हें बाहर निकाला। वे रुआंसी होकर कीचड़ से सने हुए कपड़े धारण किए घर में प्रविष्ट हुईं। अभी दो दिन पहले ही एक नवयुवक बाइक सवार मोबाइल पर अपनी प्रेयसी से बात करने में इतना मशगूल हुआ कि अपनी स्ट्राइलिश बाइक समेत नालीदर्शन को प्रवेश कर गया। बमुश्किल लोगों ने उसको बाहर निकाला। इस तरह की तमाम घटनाएं लगातार होती रहती हैं। कार्य में प्रगति भले न के बराबर हो लेकिन आते-जाते लोगों को ‘कार्य प्रगति पर है’ का बोर्ड जरूर दिखाई पड़ता है।

सड़क निर्माण में विलंब को पक्ष और विपक्ष के नेता आपदा में अवसर के रूप में देखते हैं। वे नेता जो चार साल पहले चुनावी रण में धूल काट चुके थे, वे एक लंबे अंतराल के बाद अपने पंख फड़फड़ा कर मुद्दा लपकने की चेष्टा में जुट जाते हैं, ताकि उनकी राजनीतिक बेरोजगारी दूर हो सके। वहीं सत्तासीन नेता यह प्रयास करते हैं कि सड़क निर्माण कार्य चुनाव के ठीक पहले ही पूर्ण हो, ताकि उनके अपने क्षेत्र में विकास कार्यों की फेहरिस्त में इसे जोड़ा जा सके और जाते जाते के जरिए को और मजबूत किया जा सके।

पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण

कविता के आकाश में स्त्री चेतना के स्वर

कवित्री आरती आस्था का पांचवां कविता संग्रह ‘छत पर लड़कियां’ कुछ समय पूर्व प्रकाशित हुआ है। इन कविताओं की रेंज बहुत बड़ी ही नहीं बहुस्तरीय भी है। यहां सदियों से पितृसत्तात्मक सोच वाले समाज में पली-बढ़ी स्त्री को दारुण व्यथा के साथ ही स्त्री चेतना का वह स्वर भी गुंजता है, जो हर अनुचित प्रतिबंध को अस्वीकारता है। ‘छत पर खड़ी लड़कियां/देखते हुए डूबते



कभी नहीं है डूबना/यह प्रक्रिया भर है/दोबारा से उगने की।’ जैसी पंक्तियां यह साबित करती हैं कि स्वतंत्रचेता स्त्री प्रतिकूल परिस्थितियों में भी हार मानने के बजाय नई उड़ान भरने को तत्पर रहती है। ‘बिंदी और सिंदूर’ कविता एक ऐसा बिंब उकेरती है, जो पारंपरिक प्रतीकों को भी नए संदर्भ में परिभाषित करती है। यहां स्पष्ट होता है कि आज स्त्री अपने अस्तित्व को स्वीकारने में जरा भी नहीं हिचकिचाती है। स्त्री की सोच में आए क्रांतिकारी

बदलाव को संग्रह की कई अन्य कविताओं में स्पष्ट तौर पर लक्षित कर सकते हैं। ‘मी लॉर्ड! मुझे ‘चाय दीजिए’ कविता में वह कहती हैं, ‘मैंने कल कर दिया/मी लॉर्ड/उस लड़की का/परंपराओं, संस्कारों के हवन कुंड में/होम किए दे रही थी जो/खुद को/रखने को झूठा मान/घर परिवार का।’ ‘सुनो नादिया’ जैसी कविता को शामिल करने से इस संग्रह की कविताओं का कैमवास और भी विस्तारित सूरज को/सीखती हैं, डूबना नहीं है डूबना/यह प्रक्रिया भर है/दोबारा से उगने की।’ जैसी पंक्तियां यह साबित करती हैं कि स्वतंत्रचेता स्त्री प्रतिकूल परिस्थितियों में भी हार मानने के बजाय नई उड़ान भरने को तत्पर रहती है। ‘बिंदी और सिंदूर’ कविता एक ऐसा बिंब उकेरती है, जो पारंपरिक प्रतीकों को भी नए संदर्भ में परिभाषित करती है। यहां स्पष्ट होता है कि आज स्त्री अपने अस्तित्व को स्वीकारने में जरा भी नहीं हिचकिचाती है। स्त्री की सोच में आए क्रांतिकारी

पुस्तक: छत पर लड़कियां (कविता संग्रह), लेखिका: आरती आस्था, मूल्य: 299 रुपये, प्रकाशक: न्यू वर्ल्ड पब्लिकेशन, नई दिल्ली



गणपति बप्पा का भव्य विसर्जन आस्था-सामूहिकता का उत्सव

पर्व-संस्कृति
धीरेज बसाक

विघ्न विनाशक गणपति की विदाई का दृश्य अपने आपमें भारतीय संस्कृति का एक अनूठा दृश्य होता है। सिर पर पगड़ी बांधे बुजुर्ग, जयघोष करते युवा और रंग-बिरंगे कपड़ों में सजी महिलाएं, कंधों पर गणपति की प्रतिमा उठाए भक्तगण और ढोल की थाप पर थिरकते अलग-अलग उम्र के लोग-सब एक ही स्वर में पुकारते हैं, ‘गणपति बप्पा मोरया!’ कुछ घंटे पहले तक जो प्रतिमा किसी घर, गली या मुहल्ले के एक मंडप की केंद्र बिंदु थी, विसर्जन के समय वह हजारों लोगों की साझी आस्था और भावनाओं का केंद्र बन जाती है। यही गणेश विसर्जन की सबसे बड़ी सांस्कृतिक विशेषता है। यही भव्य दृश्य आगामी (25 सितंबर) अनंत चतुर्दशी को फिर देखने को मिलेगा।

सामूहिकता-साझेदारी का उत्सव

गणेशोत्सव की खूबसूरती केवल प्रतिमा की स्थापना और पूजा में नहीं बल्कि उसके आस-पास निर्मित होने वाली सामुदायिक दुनिया में भी है। मुहल्ले में मंडप लगाना, मिलकर सजावट करना, सामूहिक रूप से प्रसाद तैयार करना और फिर मिलकर आरती में शामिल होना, वास्तव में गणेश स्थापना से लेकर गणेश विसर्जन तक एक लंबा सांस्कृतिक उल्लास लोगों के बीच छाया रहता है। यह उल्लास विसर्जन के समय चरम पर पहुंचकर भावुक विदाई में बदल जाता है। अगर गणेश विसर्जन को ध्यान से देखें तो लगता ही नहीं कि यह किसी मूर्ति का विसर्जन है। ऐसे लगता है जैसे अपने किसी अत्यंत प्रिय से हम बिछड़ रहे हों। गणेश-प्रतिमा विसर्जन के समय सामूहिकता का सौंदर्य देखने लायक होता है। कोई प्रतिमा उठाना है, कोई रास्ता साफ करता है, कोई पानी बांटता है, कोई ढोल बजाता है, कोई फूल बरसाता है, कोई पीछे चल रहे बच्चों का ध्यान रखता है, यह समूचा उल्लास सामूहिकता और साझेदारी का उत्सव होता है।



मिट जाते हैं सभी भेदभाव

गणेश विसर्जन भारतीय समाज की उस पुरानी परंपरा को जीवित करता है, जिसमें उत्सव केवल देखने की चीज नहीं है, मिलकर जीने का आयोजन होता है। सामान्य दिनों में भले भारतीय समाज की सामाजिक संरचना में जाति, वर्ग, पेशा और आर्थिक स्थिति की अनेक दूरियां दिखाई पड़ती हों, लेकिन गणपति पूजा में यह कहीं नहीं दिखती।

किसी हाथ में आरती की थाली होती है, तो कोई रस्सी पकड़कर प्रतिमा के साथ चल रहा होता है, कोई ढोल बजा रहा

होता है और कोई नृत्य कर रहा होता है। यहां व्यक्ति की सामाजिक पहचान से कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण उसकी साझी भागीदारी बन जाती है। यही वजह है कि गणेशोत्सव सिर्फ पूजा का पर्व नहीं बल्कि सामाजिक मेल-जोल का सार्वजनिक उत्सव होता है।

पीढ़ियों को जोड़ता उत्सव

गणेश विसर्जन सांस्कृतिक उत्सव कई पीढ़ियों को एक साथ जोड़ देता है। बुजुर्गों के पास परंपरा की स्मृतियां होती हैं, युवाओं के पास ऊर्जा और आयोजन की जिम्मेदारी संभालने का भाव होता है। बच्चे पूरे उत्सव में उत्सुकता और विस्मय के साथ भागीदार रहते हैं। एक बुजुर्ग जब बच्चे को समझाता है कि गणपति की स्थापना क्यों की जाती है और विसर्जन का अर्थ क्या है, तो यह सिर्फ एक धार्मिक जानकारी नहीं होती। यह उस

विशेष: अनंत चतुर्दशी, 25 सितंबर

अनंत चतुर्दशी के अवसर पर सैकड़ों ढोल की थाप, सामूहिक जयघोष और भक्तों की नम आंखों के बीच गणपति बप्पा की विदाई केवल एक प्रतिमा का विसर्जन नहीं, बल्कि सामूहिक आस्था और अपनत्व का उत्सव भी होता है। हजारों हाथ जब बप्पा को विदा करते हैं, तो हर कदम में परंपरा, साझेदारी और अगले बरस लौटने की उन्मीद साथ चलती है।

सांस्कृतिक स्मृति को अगली पीढ़ी तक पहुंचाने का जरिया होती है, जो ऐसी ही परंपराओं से मिलती है। इस तरह हर साल होने वाला विसर्जन परंपरा की पुनरावृत्ति के साथ-साथ उसके हस्तांतरण का भी अवसर बन जाती है।

विदाई के साथ पुनर्मिलन का विश्वास

गणपति विसर्जन का सबसे भावुक क्षण वह होता है, जब भक्त गणपति की प्रतिमा को विदा करते हैं, लेकिन इस विदाई में स्थाई वियोग का भाव नहीं होता। क्योंकि विदाई के दौरान जो जयकारा लगता है, उसमें विदाई के साथ-साथ वापसी का निवेदन कहीं ज्यादा मुखर होता है, ‘गणपति बप्पा मोरया, अगले बरस तू जल्दी आ।’ यह जयघोष भारतीय संस्कृति के एक गहरे जीवनदर्शन को व्यक्त करता है। यहां विदाई के साथ पुनर्मिलन का विश्वास मौजूद होता है। इसलिए विसर्जन का दुःख अगले आगमन की प्रतीक्षा के एहसास में कम हो जाता है। मिट्टी की प्रतिमा का पानी में विलीन होना भी इसी भाव को विस्तार देता है, जिस मिट्टी से आकृति बनी, वह फिर प्रकृति में लौट जाती है। प्रतीकात्मक रूप में यह प्रक्रिया यह बताती है कि रूप बदलता है, लेकिन संबंध और स्मृति बने रहते हैं।

गढ़ते हैं जीवंत लोक-संस्कृति

गणेश विसर्जन केवल धार्मिक जुलूस नहीं होता। ढोल-ताशे, लोकगीत, नृत्य, पारंपरिक वाद्य और सामूहिक जयघोष यह सब मिलकर एक जीवंत लोक-संस्कृति गढ़ते हैं। महाराष्ट्र में विशेषकर ढोल, ताशा तथा विसर्जन यात्रा का हिस्सा होते हैं। उनकी यह सामूहिक लय केवल संगीत नहीं पैदा करती बल्कि साथ चल रही भीड़ को भी एक रिश्ता, एक साझी ताल देती है। हजारों कदम जब एक ही ताल पर उठते हैं और एक ही ताल पर जमीन में गिरते हैं, तो व्यक्ति भीड़ का एक हिस्सा भर नहीं रहता बल्कि सामूहिक अनुभव का सहभागी बन जाता है। गणेश विसर्जन में यही सांस्कृतिक अनुभव हर कोई महसूस करता है।

साझी भावनाओं का सांस्कृतिक प्रदर्शन

गणेश प्रतिमा भले किसी एक परिवार ने स्थापित की हो या किसी सार्वजनिक मंडल ने, पर उसकी विदाई सामूहिक होती है। विसर्जन यात्रा जहां-जहां से गुजरती है, वहां-वहां के लोग इसका हिस्सा हो जाते हैं, फिर भले चाहे वो कुछ कदम चलकर इससे अलग हो जाएं। विसर्जन जुलूस जहां से गुजरता है, वह अजनबी भीड़ के रूप में नहीं गुजरता बल्कि हर जगह मौजूद लोग इसमें शामिल हो जाते हैं। इसलिए विसर्जन वास्तव में प्रतिमा को महज पानी में प्रवाहित करने की प्रक्रिया नहीं है, यह साझी आस्था, साझी जिम्मेदारी और साझी भावनाओं का सामूहिक और सांस्कृतिक प्रदर्शन है। *

डिजिटल इंपैक्ट
डी. जे. नंदन

एक समय था, जब बॉलीवुड सितारों की लोकप्रियता का पैमाना सिनेमाघरों के बाहर लगी भीड़, फिल्मी पत्रिकाओं के कवर और टीवी इंटरव्यू हुआ करते थे। किसी अभिनेता की फिल्म रिलीज होती थी, तो शहरों की दीवारें उसके पोस्टर से ढक जाती थीं। आज का दौर उस दौर से बिल्कुल अलग है। अब किसी भी फिल्म की सफलता का पहला संकेत टिकट खिड़की पर नहीं बल्कि इंस्टाग्राम रीलस, यू-ट्यूब शॉर्ट्स और एक्स (ट्विटर) के ट्रेंडिंग हैशटैग में दिखाई देता है। बदल गई स्टारडम की परिभाषा: बॉलीवुड में स्टारडम का गणित इस सोशल मीडिया के युग में पूरी तरह से बदल चुका है। आज किसी अभिनेता की लोकप्रियता का पैमाना, सिर्फ उसकी अभिनय क्षमता नहीं बल्कि सोशल मीडिया पर उसकी फैन फॉलोइंग मानी जाती है। आज के इस डिजिटल दौर में फैन आर्मी और सोशल मीडिया पर पैदा होने वाले बज से किसी भी स्टार का असली स्टारडम तय होता है। डिजिटल प्लेटफॉर्म, अब हिंदी फिल्मों की खोज और दर्शकों को सिनेमाघरों तक पहुंचाने वाले सबसे प्रभावी माध्यमों में गिने जा रहे हैं। फैन आर्मी में बदला फैन क्लब: 1990 और 2000 के दशक में फिल्म स्टार्स के फैन क्लब हुआ करते थे। वे पोस्टर लगाते थे, अपने पसंदीदा एक्टर का जन्मदिन मनाते थे और कभी-कभी वो थिएटर के बाहर जहां उनके फेवरेट एक्टर की फिल्म लगी होती थी, वहां जश्न मनाया करते थे। लेकिन आज यही फैन क्लब, फैन आर्मी में तब्दील हो चुके हैं। किसी फिल्म का टीजर आते ही उस फिल्म के एक्टर के हजारों प्रशंसक उसे सोशल मीडिया में शेयर करते हैं। पहले जो चर्चा गली-गली तक पहुंचने के लिए कई दिन और कई हफ्तों लिया करती थी, आज वह चर्चा सोशल मीडिया के जरिए प्रशंसकों के बीच कुछ ही घंटों में पहुंच जाती है।

इनसे प्रूफ होता है सोशल मीडिया इंपैक्ट

‘अल्फा’ का टीजर और डिजिटल ट्रैकिंग: कुछ समय पहले आलिया भट्ट अभिनीत फिल्म ‘अल्फा’ का टीजर आते ही सोशल मीडिया पर जबरदस्त चर्चा शुरू हो गई। कई बड़े सितारों ने सार्वजनिक रूप से इसकी सरहना की, जिससे फिल्म को अत्यधिक डिजिटल बढत मिल गई। यू-ट्यूब फैनफेस्ट: वरुण धवन ने यू-ट्यूब फैनफेस्ट में अपनी फिल्म के गीत का लाइव प्रचार किया है।यह दिखाता है कि डिजिटल आयोजनों का महत्व अब पारंपरिक प्रेस कॉन्फ्रेंस से ज्यादा हो गया है। वायरल वीडियो का इंपैक्ट: 2026 के गणतंत्र



दिवस रिवर्सल में सेनिकों का एक बॉलीवुड गीत पर मार्च करते हुए वीडियो वायरल हुआ और पुराने हिट गीत को एक झटके में नई पीढ़ी तक पहुंचा दिया गया। इस तरह सोशल मीडिया पुराने कंटेंट को भी लोकप्रिय बनाने में देर नहीं लगाना। इंपलूएंसर मार्केटिंग: फिल्म निर्माता, इंस्टाग्राम और यू-ट्यूब इंप्लूएंसर्स के साथ साझेदारी कर रहे हैं ताकि पारंपरिक विज्ञापनों से आगे सीधे युवाओं तक पहुंच सकें। हालिया बॉलीवुड अध्ययनों के अनुसार यू-ट्यूब, इंस्टाग्राम और कुछ एप्स अब दबकें को फिल्म देखने के लिए प्रेरित करने लगे हैं।

आज सोशल मीडिया पर एक रील, एक वायरल डायलॉग या लाइव्स किसी स्टार की चमक रातों-रात आसमान तक पहुंचा सकते हैं। अब सोशल मीडिया फॉलोअर्स किसी एक्टर का स्टारडम तय करने में बड़ा रोल निभा रहे हैं।

किसी समय तक फिल्मों का प्रचार और एक्टर्स का स्टारडम कई पारंपरिक तरीकों पर निर्भर होता था। आज सोशल मीडिया पर एक रील, एक वायरल डायलॉग या लाइव्स किसी स्टार की चमक रातों-रात आसमान तक पहुंचा सकते हैं। अब सोशल मीडिया फॉलोअर्स किसी एक्टर का स्टारडम तय करने में बड़ा रोल निभा रहे हैं।

सोशल मीडिया से बदल रहा बॉलीवुड स्टारडम का सीन



दर्शकों-फैंस से सीधे जुड़ रहे कलाकार: वास्तव में सोशल मीडिया ने कलाकारों को सीधे-सीधे दर्शकों से जोड़ दिया है। पहले सितारों और दर्शकों के बीच मीडिया की एक दीवार होती थी। अब फिल्म स्टार्स अपने फोन से सोशल मीडिया के जरिए सीधे करोड़ों लोगों तक पहुंच जाते हैं। प्रचार का बड़ा माध्यम बना सोशल मीडिया: दुनिया भर में सुपर फैन इकोनॉमी, एक बड़ा और कल्चरल इकोनॉमी का मॉडल बन चुका है। इसमें प्रशंसक किसी कलाकार के प्रचारक की भूमिका निभाते हैं। आज फिल्म के गानों की सफलता का एक पैमाना यह है कि उस पर कितनी रीलस बनी हैं। निर्माता अब ऐसे गीत और संवाद तैयार करवाते हैं, जो सोशल मीडिया पर वायरल हो सकें। इंस्टाग्राम, यू-ट्यूब और

डिजिटल इंप्लूएंसर्स के सहयोग से फिल्म प्रचार का स्वरूप पूरी तरह से बदल गया है। वास्तव में आज फिल्म के प्रचार का बड़ा हिस्सा फिल्म के कंटेंट, उसकी बनावट-बुनावट से कहीं ज्यादा उसका एंजोरिश्म हो चुका है। कौन-सा वीडियो कितने लोगों तक पहुंचेगा, कौन-सा गाना वायरल होगा, कौन-सा संवाद बनेगा, इन सबका निर्णय अब काफी हद तक सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म में होने लगा है। यही वजह है कि निर्माता अब सबसे पहले अपने फिल्म के प्रचार-प्रसार और अच्छे व्यवसाय के लिए मजबूत डिजिटल टीम का गठन करते हैं। डिजिटल इंपैक्ट रखता है मायने: यह सच है कि आज भी केवल सोशल मीडिया के जरिए कोई फिल्म हिट नहीं हो सकती है। लेकिन यह बात भी सही है कि सोशल मीडिया की चर्चा के बिना आजकल अच्छी से अच्छी फिल्मों भी चर्चा से वंचित रह सकती है। आज अखबारों, टीवी चैनलों और किसी जमाने में शहर में घूम-घूमकर लाउडस्पीकर के जरिए फिल्म का प्रचार करने वाला तौर-तरीका सब खत्म हो चुका है और अगर है भी तो वो प्रभावी नहीं रहा। आज एक वायरल रील, मीम या हैशटैग से फिल्म का जबर्दस्त प्रचार हो सकता है और हो रहा है। इस पूरे सिनेरियो को देखकर यह कहना गलत नहीं होगा कि आने वाले वर्षों में किसी बॉलीवुड एक्टर का स्टारडम पूरी तरह इस बात से तय होगा कि उस अभिनेता के फालोअर्स कितने हैं? उसकी डिजिटल एंगेजमेंट क्या है? और उसकी फैन कम्युनिटी और ऑनलाइन प्रभाव कितने महत्वपूर्ण हैं? *

काफी सिर्फ एक पेय नहीं है, बल्कि यह वैश्विक संस्कृति और न जाने कितनी अनेकही कहानियों का हिस्सा भी है। सुबह या शाम गरमा-गरम कॉफी पीना दुनिया के करोड़ों लोगों की दिनचर्या का हिस्सा है। कॉफी बाँस को वनस्पति विज्ञान के नजरिए से देखा जाए, तो यह नाम पूरी तरह से एक भ्रांति है। कॉफी का एक छोटा पेड़ होता है, जिस पर चमकीले लाल रंग के फल लगते हैं, जिन्हें ‘कॉफी चेरी’ कहा जाता है। इन फलों के अंदर दो बीज होते हैं। जब फल पक जाते हैं, तो उनके गूदे को हटाकर इन बीजों को निकाला जाता है, जिन्हें हम भूनकर कॉफी पावडर बनाते हैं। क्या आप जानते हैं कि कॉफी से जुड़े कुछ किस्से भी बेहद मजेदार और हैरान करने वाले हैं?

कॉफी के खिलाफ महिलाओं का आंदोलन: 17वीं शताब्दी के लंदन में कॉफी हाउसेस, पुरुषों के सामाजिक जीवन का मुख्य केंद्र बन गए थे। पुरुष दिन भर घरो से बाहर रहकर कॉफी हाउसों में राजनीति, व्यापार और दर्शनशास्त्र पर चर्चा करते थे। इससे तंग आकर साल 1674 में लंदन की महिलाओं ने एक अनेखा मोर्चा खोला, जिसे हिस्ट्री में ‘द विमैस पिटीशन अगेंस्ट कॉफी’ के

पक्षी जगत
एन. के. अरोड़ा

जमीन से मीलों ऊपर उड़ते हुए कुछ पक्षी जब हजारों किलोमीटर की अपनी लंबी यात्रा पर होते हैं, तो हर समय जगें हुए नहीं होते, बीच-बीच में सोते भी हैं। फिर चाहे वे आसमान में उड़ रहे हों, उसके नीचे चारों तरफ हजारों मील तक समुद्र ही क्यों न पसर हो। यही नहीं अगर सैकड़ों किलोमीटर तेज आंधी भी चल रही होती है, तो भी उनकी सेहत पर फर्क नहीं पड़ता। वे उस समय भी उड़ते हुए अपनी जरूरी नौद ले लेते हैं। ऐसी ही अद्भुत विशेषताओं वाले पक्षियों में ग्रेट फ्रिगेटबर्ड भी शामिल है।

वैज्ञानिकों ने किया अँजवः ग्रेट फ्रिगेटबर्ड पर लगातार नजर रखते हुए वैज्ञानिकों ने पाया है कि यह कई-कई दिनों तक आसमान में उड़ते हुए जमीन पर नहीं उतरता और बिना रुके अपनी यात्रा जारी रखता है। ऐसा करते हुए इसके मस्तिष्क का एक हिस्सा घंटों-घंटों आराम करता है और दूसरा हिस्सा जरूरी काम यानी उड़ान को संचालन करता है। ऐसा करते समय इसकी एक आंख बंद हो सकती है और मस्तिष्क का विपरीत हिस्सा आराम कर सकता है, जबकि दूसरी आंख और मस्तिष्क का दूसरा हिस्सा संजग रहता है और अपनी परिस्थितियों तथा वातावरण पर लगातार नजर रखता है।

रोचक / शिखर चंद जैन

टेस्टी कॉफी से जुड़ी इंट्रेस्टिंग स्टोरीज



हिस्सा माना जाता था। वहाँ एक कानून था कि यदि कोई पति अपनी पत्नी को रोजाना एक निश्चित मात्रा में कॉफी उपलब्ध कराने में असमर्थ रहता था, तो पत्नी को इस आधार पर अपने पति से कानूनी रूप से तलाक लेने का पूरा अधिकार था। उस दौर में पुरुषों के लिए पत्नी के लिए कॉफी का इंतजाम करना सबसे जरूरी काम माना जाता था। *

आपको जानकर अचरज होगा कि आकाश में कई मील की ऊँचाई पर उड़ते पक्षी अपनी लंबी उड़ान के दौरान सो भी लेते हैं। उड़ते-उड़ते सोने का यह कमाल वे कैसे कर लेते हैं?

कैसे बेफिक्र होकर सोते हैं आसमान में उड़ते पक्षी



हवा का भी लेते हैं सहारा: वैज्ञानिकों ने यह भी पाया है कि ग्रेट फ्रिगेटबर्ड और लंबी उड़ान भरने वाले अन्य पक्षी उड़ते समय हवा को अपने एक सहारे के रूप में इस्तेमाल करते हैं। यही कारण है कि जब वे ऊँचे आसमान में लंबी उड़ान पर होते हैं, तब बार-बार पंख नहीं फड़फड़ाते। वास्तव में समुद्र के ऊपर उठने वाली गर्म हवा और वातावरण में मौजूद हवा की धाराओं का बड़ी चतुराई से इस्तेमाल करते हुए ये पक्षी उसमें ग्लाइडिंग करते हैं। यह ऊर्जा बचाने और लगातार उड़ान के बावजूद न थकने का एक सीक्रेट तरीका भी है। जैसे कोई ग्लाइडर

विमान, हवाओं की धाराओं का इस्तेमाल करते हुए कम या बिल्कुल कम ऊर्जा का इस्तेमाल करके उड़ान की दूरी तय कर सकता है। उसी तरह ये पक्षी भी वातावरण की ऊर्जा को अपने हित में इस्तेमाल करने की जुगत जानते हैं। ऐसे लेते हैं हवा में नौद: वैज्ञानिकों ने अब तक जो स्टडी की है, उसके आधार पर आसमान में लंबी उड़ान के दौरान पक्षियों की नौद सीमित तथा नियंत्रित होती है। इसे वैज्ञानिकों ने ‘स्लो वेब स्लीप’ माना है और पाया है कि उड़ान के दौरान इनकी यह नौद जमीन पर उनके सोने की तुलना में बिल्कुल अलग होती है।